श्री

श्रीकृष्णायनमः

श्रीमदाचार्यश्री विठ्ठलेश्वरचरणकमलेभ्यो नमः

श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः

अथ

श्रीआचार्यजीकृतश्रीकृष्णाश्रय ग्रन्थ तेनी टीका श्री कल्याणरायजीकृत तथा श्री आचार्यजीकृतचतुःश्लोकीनी टीका श्री व्रजरायजीकृत तेनुं गुजराती भाषांतर.

रचनार

चिरंजीवी लालजी गोस्वामि श्रीविठ्ठलरायजी

आपनी आज्ञा लईने वैष्णव ठा० दयाल मूळजीयें

मूलग्रंथसहित

मुंबईमध्यें बॉम्बेसिटीप्रेसमां छपाव्युं.

सन १८८७

संवत् १९४४ ना कार्तिक वद १२ शनिवासरे.

नुछावर रु० १)

सूचना.

अशरण शरण शरणागत वत्सल कृपा सिंधु दीनबंधु गोस्वामि श्री विठ्ठल रायजीने दासानुदास ठक्कर दयाल मूलजीनी दैन्य पूर्वक विनति ए छे जे आप श्रीयें जे टीका लखी लेवानी मने गुलामने आज्ञा कीधी अनें ते शोधावीने पाछी लखावी, पण ते लखवांमां.मारी अल्पबुद्धि तथा मंद बुद्धि वालानी चूक घणी थई हशे, तेआपश्री कृपा करीनें क्षमा करशो. एज महारी विनंती छे.

सर्व ग्रंथ वाञ्चनारा वैष्णवोने हुं ठक्कर दयाल मूलजी नम्रता पूर्वक विनती करु छुं के कथा लखती वखतें महारी अल्प तथा मंद बुद्धि वालानी जे-जे चूक थई होय ते सर्व वैष्णवो एं महारी उपर कृपा करीनें क्षमा करवी.

आ ग्रंथमां जे जे ठेकाणे कठिण शब्दो देखवामां आव्या छे, तेनो अर्थ एज ग्रंथना सेवटना पेजमां प्रथम एक कोष्टकमां ते कठिण शब्द लखी

नें पछी बीजा कोष्टक मां तेनो अर्थ कर्यो छे-
त्यांथी जोई लेवो·

आ प्रस्तावना शोले ग्रंथो बाबतनी छे· तेथी
ज्यारे बधाय ग्रंथ छपाईने भेला थाय, त्यारें ते
मां प्रथम ग्रंथजे यमुनाष्टक तेनी टीकाथी पहे
ला पाना मां ग्रंथ बधा साथें जोडती वखतें नाख
वा, अथवा जेने ए ग्रंथो छूटाज राखवा होय तेणें
बध्धा ग्रंथोनी आ एकज प्रस्तावना समजवी·

प्रस्तावना·

वेदादि शास्त्रना सारात्मक सिद्धांत रूप पुष्टिमार्गना प्रवर्त्ती कर्त्ता श्री मंदाचार्यचरणो ए पोताना मार्गानुवर्त्ति वैष्णवो उपर कृपा करीनें वेदशास्त्रनां प्रमाण वचनो सहित संस्कृत-ग्रंथो कर्‍या छे· अने तेमनी टीका आचार्य वंशीय गोस्वामि वर्यो ये संस्कृत मांज करी छे· पण हमणानां घणा खरा वैष्णवोने संस्कृत नूं ज्ञान न होवाथी संस्कृत ज्ञान विनाना एवा जिज्ञासु वैष्णवो पण पोताना मार्गमां शिथिल थईने आरूढ पतित पणानें पामता जोईने पृथ्वी दिग्विजय करनार गोस्वामिश्री पुरुषोत्तमजी यें शास्त्रप्रमाण वचनो सहित पूर्वोक्त ग्रंथो उपर टीकाओ करी छे- ते मध्यें थी जेटली टीकाओ आपश्रीने मली छे ते उपरथी सांप्रत गोस्वामि-श्री लालमणीजी सुत श्री विठ्ठलरायजी नित्य पोताना-मंदिरमां कथा करे छे पण श्रोताजन संसारासक्त होवाथी ए भाषणनुं अक्षरशः अवधारण करी शकता नथी· एम जोईं तेमनी उपर कृपा करीने ते कथा गुर्जर भाषामां लखी ले-वानें वैष्णव दयाल मूळजीने आपश्री एं आज्ञा करी· ते आ-ज्ञानें अनुसरीने ए कथा सर्वे वैष्णव दयाल मूळजी एं लखी

लीधी, पण कथा श्रवण करवा आवनारा वैष्णवो एं आप-श्रीने दैन्य पूर्वक विनती करीके, लखी लीधेली कथा सर्व छपावी बाहेर पडाय तो सारूं, के जेथी सर्व जिज्ञासु वैष्णवोंने पोताना अवकाशना वखत मां जरा वार पण वांचवा थी तेमने पोताना जन्म वृथा जावानुं. कांईक ज्ञान थाय. अने भगवत्कथा मां तथा भगवत्सेवा मां रुचि थाय. एवा हेतुथीं ए ग्रंथोनी टीका छपावी बाहेर पाडवाने आपश्री विट्ठलरायजीनें विनति करी, त्यारें आपश्रीं ये विचार्युं के ग्रंथो छपाववा एकेटला एक गोस्वामि बालकोने तथां अमोनें पण रुचता नथी. पण छपाव्या विना पुस्तकोना थोडा पणा थी, भगवत्कृपाथी वैष्णवो थया, तो ए पण ग्रंथो मल्या विना ग्रंथना अबोधथी आवा उत्कृष्ट मार्गमां पुरुषोत्तमना संबंधनुं तथा सेवा वगैरेनुं सुख अनुभवमां आवतुं नथी. एवी महोटी खामी जोईनें छपाववुं जोइए. पण एकला जिज्ञासु वैष्णवोंनेज आपवाथी छपाववा बाबतनो दोष पेदा थाय छे ते नहि थाय; एम विचारीनें ए विनती अंगिकार करीने ए ग्रंथो छपाव्या छे. तेथी प्रत्येक गाममां जे जे वैष्णवोने बीजाने पुस्तक आपवाने मोकल्या होय तेमणे उपर लख्या प्रमाणे ना जिज्ञासु वैष्णवोनेज आपवा केमके छपाववानो हेतु वधारे पुस्तको खपाववा वगैरे मतलब उपर नथी.

॥ श्रीः ॥

श्रीकृष्णाश्रय ग्रंथनी टीका.

श्री कल्याणरायजी कृत.

तेनुं

गुजराती भाषांतर

रचनार

चिरंजीवी लालजी श्री विठ्ठलरायजी.



॥ स्तुतीनो श्लोक ॥

यल्लीलालवसंस्पर्शान्नरोचंतेऽन्यदाशिषः॥ तं राधाहृदयानंददायकं कृष्णमाश्रये॥ १॥ यत्कृपादृष्टितो जंतुर्गोविंदं विंदते मुदा॥ भक्त्याऽहं तान्निजाचार्यानभिवंदेऽर्थसिद्धये॥ २॥

अर्थ- जेनी लीलाना लवनो स्पर्श थाय तो बीजी रीतना वैभव कंई पण गमे नहीं एवा श्रीराधाना हृदयने आनंद आपनारा जे श्रीकृष्ण तेमनो हुं

आश्रय करुं छउं. ए रीते टीकाकार श्रीकल्या-
ण रायजी मंगलाचरण करेछे.

जेनी कृपादृष्टिथी जीव आनंदे करीनें, गोविंद
(एटले गाय अने गोपआदिना इंद्र) तेने पामेछे
एवा जे निजाचार्य तेमने भक्तिथी आना अर्थनी
सिद्धि थवा सारु हुं नमस्कार करुं छउं. श्रीकृ-
ष्णना आश्रयने सर्वसाधकपणुं छे तेथी पो-
ताना मार्गवर्तीओने सर्व सिद्धिने अर्थे वरदान
जाणे आपता होय तेवी रीते करता एवा श्री
आचार्य-चरण कृष्णाश्रयस्तोत्रनुं निरूपण करे
छे. हवे त्यांहां हमणां देशादिक छ साधनोने अ-
साधकपणुं कहेतां भक्तोने भगवानज सर्व सा-
धनरूप छे. अने चार प्रकारना पुरुषार्थ रूप
भगवानज छे तेथी भगवाननुं स्वरूप दशली-
लाथी वर्णन थायछे ते वात श्रीमद्भागवतना द्वि-
तीय स्कंधमां कही छे॥ श्लोक॥ **अत्र सर्गो
विसर्गश्च स्थानं पोषणमूतयः॥ म
न्वंतरेशानुकथा निरोधो मुक्तिराश्रयः**

अर्थ- सर्ग, विसर्ग, स्थान ,पोषण, ऊति, मन्वंतर, ईशानुकथा, निरोध, मुक्ति, अने आश्रय ए दश लीला अने दश प्रकारना भक्त ते एवी रीते के त्रण गुण सात्विक, राजस, अने तामस, ए त्रणेना त्रण त्रण भेद मळी नव. अने दशमा निर्गुण एम दश प्रकारना भक्त अने वळी 'दशवे पशोः प्राणाः' ए श्रुतिए करीने जेम प्राण बध्धुं सिद्ध करेछे तेम आ दश श्लोक प्राण जेवा छे तेथी आ दश श्लोकना स्तोत्रने सर्व साधकपणुं छे तेथी दश श्लोके करीने प्रार्थनाना मिशे करीने भगवाननी स्तुति करेछे तेमां प्रथम काळ छे ते मुख्य अंग छे. पण काल कंई सिद्ध करतो नथी. तेथी काल धर्मने दूर करीने आप सर्व मार्गेषु नष्टेषु इत्यादि श्लोकोए करीने आश्रयने मागेछे.

॥ मूलश्लोक ॥

सर्व मार्गेषु नष्टेषु कलौच खलधर्मिणि ॥ पाषंडप्रचुरे लो-

के कृष्ण एव गतिर्मम ॥१॥

अर्थ- खलधर्मवालो जे कलि तेमां सर्व मार्ग नष्ट थया अने पाखंड जेमां घणो एवो लोक थयो, त्यारे कृष्णराज महारी गति, थाओ, एटलुं शेष छे. खल एटले अंतरदुष्ट एटले मांहेथी दुष्ट एवा धर्मवालो कलियुग ते ज्यारे थयो अने खर धर्मिणि एवा पाठमां दुःखथी जेनी चेष्टा सहेवाय नहीं एवो कलियुग थयो अने लोक छे ते पाखंड जेमां घणो एवो थयो, पाखंड एटले त्रण वेदना धर्म पाळे ते पा कहेवाय अने तेमनुं खंडन करे ते पाखंड, ते जेमां घणा थया छे एवो लोक थयो त्यारे 'कृषिर्भूवाचक' ए श्रुतिए करीने निरूपण करवा योग्य सदानंद जे पुरुषोत्तम ते महारी गति, आश्रय, अने आ लोक तथा परलोकना अर्थना साधक थाओ. हवे खल धर्म ते शुं? ते आप आज्ञा करेछे. लोकमां मनुष्य बह्वाकरतां अधिक पाखंड जेमनांमांछेएवो थयो तेथी मार्ग एटले शोधाय एवी जगा एटले

पुरुषार्थना उपाय एटले कर्म जेथी धर्म पेदा
थाय अने ज्ञान जेथी मोक्ष पेदा थाय एवा उ-
पायो तें नष्टजेवा थया ते कई रीते एवा थया
के पाखंडमां प्रवेश थयाथी स्वर्ग एटले आत्मसु-
खनुं नाम तेने बदले लोकनुं नाम.जाणवानो
भ्रम एटले संदेह थयो तेमज मायावादनो अ-
भिनिवेष थयाथी ज्ञानमार्ग नष्ट थयो अने
योगमार्गमां निरीश्वरवाद पेठो अने उपासना
मार्ग विभूतिपर थयो तेथी उपासना मार्ग मुख्य
फलने सिद्ध करनारो छेज नही तेथी बधा मार्ग
नष्ट जेवा थया अने चकारे करीने महादेवादि देवो
जे पुरुषार्थ आपनारा छे ते पण कलिकालने मद-
द करेछे. एवंकार छे ते विशेष्यमां अन्वित छे.आं-
ई विशेष्य श्रीकृष्ण छे तेमां अन्वित छे ते बी-
जाना योगने दूर करेछे. तेथी कृष्णज महारी
गति थाओ. अंश कला नही ते बतावे छे. हवे वा-
दी कहेछे के प्रार्थना करवी ते गौणाधिकारीनुं
काम छे. अने आंई तो श्री आचार्यजी पुरुषोत्तम

छे ते एम शुं करवा करेछे? त्यांहां श्रीकल्याण
रायजी आज्ञा करेछेके भक्तने अर्थे आप करे-
छे तेथी प्रार्थनानो दोष नथी. त्यांहां वली वादी
कहेछे के मुख्याधिकारीनी रीतथी केम करता
नथी? अने गौणाधिकारीनी रीतथी केम करेछे?
त्यांहां कहेछे के एमां दोष नथी. केम के गौणा-
धिकारी पण एक अधिकारी छे. तेथी दोष न-
थी. वली वादी शंका करेछे के भक्तिमार्गवाला-
ने पण कलियुग बाधक करेछे. अने गृहादिक
मां आसक्ति छे अने लौकिक कार्य पण करे
छे. अने तेनाथी पाप पण थायछे. त्यारे भक्ति
मार्गने उद्धार करनारपणुं केम थाय? तेथी
जे कर्म मार्गमां अने ज्ञानमार्गमां दोष छे तेवा-
ज भक्तिमार्गमां पण छे. तेथी आश्रये करीने
शुं? एम कहे त्यांहां कहेछे जे एम मकहे केम
के भक्तिमार्गमां ताहारा कहेलां दूषणो नथी
ते तुं शांभल. ॥श्लोक॥ कलेर्दोषनिधे रा-
जन्नस्ति ह्येको महान् गुणः॥ कीर्तना

देव कृष्णस्य मुक्तबंधः परं व्रजेत् ॥ अर्थ-
दोषनो निधि एटले बध्धा दोषनुं स्थानक एवो
जे कलि तेनो एक म्होटो गुण छे के कृष्णना
एक कीर्तनथीज मुक्तबंध थईने कृष्णने पामे-
छे॥ श्लोक॥ यत्कृते दशभिर्वर्षैस्त्रेता-
यां हायनेन तत् ॥ द्वापरे तच्च मासेन
अहोरात्रेण तत्कलौ ॥ अर्थ- सतयुगमां
जे दश वर्ष करीने फल थाय ते त्रेतामां एक
वर्षमां थाय. द्वापरमां ते फल एक मासे करीने
थाय. ते कलियुगमां एक रात्र दाहाडामां थाय.
॥ श्लोक॥ तपसो ब्रह्मचर्यस्य जपादेश्च
फलं द्विजाः प्राप्नोति पुरुषस्तेन कलिः
साध्विति भाषितः॥ अर्थ- तपनुं, ब्रह्म-
चर्यनुं, जपादिकनुं फल हे ब्राह्मणो पुरुष पामे-
छे तेथी कलीने सारो एम कह्यो छे. श्लोक॥ कृ
ते यत्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो म-
खैः ॥ द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरि
कीर्तनात् ॥ अर्थ- जे सतयुगमां विष्णुनुं ध्यान

करनाराने अने त्रेतामां यज्ञ करनाराने अने द्वापरमां से-
वामां अने कलियुगमां ते हरिकीर्तनथी थाय छे.
श्लोक॥ **कलिं सभाजयंत्यार्या गुणज्ञा सारभागिनः॥ यत्र कीर्त्तनेनैव सर्वस्वार्थो भिलभ्यते॥** अर्थ- आर्यलोको गुणने
जाणनारा छे. अने सारना भागी छे तेथी कली-
ने आदर करेछे. केमजे जेमां एटले जे कलियुगं-
मां सारा कीर्तने करीनेज चारे तरफथी स्वार्थ मळे
छे. ए वाक्योथी कलियुग थोडा कालमां फल आ-
पेछे तेथी बाधक नथी. उलटो साधक छे. वळी पण
नीचेना वाक्योथी कह्युंछे.॥श्लोक॥ **शृण्वन् गृणन्संस्मरयंश्च चिंतयन्नामानि रूपाणि च मंगलानि ते॥ क्रियांसु यस्त्वच्चरणारविंदयोराविष्टचेता न भवाय कल्पते॥** अर्थ- आपनुं मंगल नाम अने गुण
श्रवण करतो होय अने जीभेकरीने केहतोहो-
य अने याद करतो होय अने विचार करतो होय
अने आपनां चरणारविंदनी क्रिया जे सेवा तेने

वीशे जे आविष्ट चित्तवालो होय ते फरी जन्मतो
नथी. ॥श्लोक॥ **मद्वार्तायातयामानांनबं-
धायगृहा मताः** ॥ अर्थ- मंहारी वार्तथी जे-
ना पोहोर जता होय तेने घर जे छे ते बंधन कर-
वा सारु मान्या नथी ॥ श्लोक ॥ **तावद्रागाद-
यस्तेनास्तावत्कारागृहंगृहं ॥ ताव-
न्मोहोंघ्रिनिगडो यावत्कृष्णनतेजनाः**
अर्थ-हे कृष्ण जांहां सुधी तमारा जन नथी त्यांहां
सुधी रागादिक एटले रागद्वेषादिक बधा चोर छे
अने त्यांहांसुधी घर छे ते जेलखानुं छे अने मोह
एटले सगा वगेरेमां आसक्ति ते पगनी बेडी छे.
इत्यादि वाक्योथी भगवदपर थयो तेने घर बं-
धनरूप नथी. वली पण नीचेना वाक्योथी कह्युं
छे.॥श्लोक॥ **आमयो यश्च भूतानां जाय
ते येन सुव्रत ॥ तदेव ह्यामयं द्रव्यं नपु
नाति चिकित्सितं** ॥ अर्थ- हे सारा व्रतवा-
ला जे जणशे करीने जे रोग प्राणिओने पेदा
थायछे तेज जणश जो रोगीने आपीये तो ते

रोगने मटाडे नहीं. श्लोक ॥ एवं नृणां क्रिया योगाः सर्वे संसृतिहेतवः ॥ त एवात्म-विनाशाय कल्पंते कल्पिताः परे ॥ अर्थ- ए रीते माणसोने कर्ममार्गनी क्रियानो योग अक्षरथी पर जे पुरुषोत्तम तेमां जो समर्पण करे तो पोताना जन्म मरणना कारणपणा-नो नाश करेछे. इत्यादि वाक्यथी समर्पणी लोकोने लौकिक अने अलौकिक क्रिया तुल्यं छे. वळी कह्युंछे. ॥ श्लोक ॥ मत्कर्म कुर्वतां पुंसां कर्मलोपो भवेद्यदि ॥ तत्कर्म तस्य कुर्वंति तिस्त्रः कोट्यो महर्षयः ॥ अर्थ- भगवाननुं वचन छे के महारुं कर्म एटले सेवा कर्ता होय एवा जे पुरुषो तेमने जो कर्मनो कंई लोप थई जाय तो त्रण करोड जे महर्षि जे मोटा ऋषिओ ते तेनुं कर्म करेछे. इत्यादि वाक्यथी एम बताव्युं छे के भगवत्सेवा करे अने शास्त्रमां कह्युं छे ते नकरे तो पण प्रत्यवाय न लागे ॥ श्लोक ॥ स्वपादमूलं भजतः प्रियस्य

त्यक्तान्यभावस्य हरिः परेशः ॥ विकर्म यच्चोत्पतितं कथंचिद्धुनोति सर्वं हृदि सन्निविष्टः ॥ अर्थ- पोतानां पादमूलने भजतो होय अने बीजामांथी प्रीति जेणे काढी नाखी होय एवो प्रिय जे भक्त तेने कोई रीते भूलभालथी विकर्म आवी पडे तो हृदयमां हरि छे ते बिराजीने सर्वने दूर करेछे. ॥ श्लोक ॥ एवं विमृश्य सुधियो भगवत्यनंते सर्वात्मना विदधते खलु भावयोगं, तेमे न दंडमर्हंत्यथ यद्यमीषां स्यात्पातकं तदपि हंत्युरुगायवादः ॥ अर्थ- एवो विचार करीने सारी बुद्धीवालाओ अनंत एवा भगवानने विषे सर्व प्रकारे करीनें भावनो योग करेछे एटले जोडेछे ए म्हारा दंडने योग्य नथी ते पछी एमनुं पातक पण होय तेने पण भगवाननी वार्ता हणेछे इत्यादि वाक्यथी कोई वखत पाप थई जाय तोय पण नरकादिक नथी थता. केम के कीर्तनादिके करीनेज तेमनां पापनो नाश

थाय छे. ए वात श्रीगीताजीमां कही छे. ॥श्लो-
क॥ **अपिचेत् सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ॥ साधुरेवस मंतव्यः सम्यक् व्यवसितो हि सः ॥ १ ॥** अर्थ-अत्यंत दुराचारी. पण जो होय अने अनन्यताथी महारुं भजन करे तो. ते साधु एटले सारो मानवो जोइए एनो निश्चय सारो छे. ॥श्लोक॥
यः कश्चिद्वैष्णवो लोके मिथ्याचारो प्यनाश्रमी ॥ पुनाति सकलान् लोकान् सहस्रांशुरिवोदितः ॥ अर्थ-लोकमां जे कोई वैष्णव होय मिथ्याचारी होय अने अनाश्रमी एटले कोई आश्रममां पण न होय एवो पण होय तोय पण बधां लोकने पवित्र करे छे. जेम सूर्य बधायने प्रकाश करे छे. वली श्रीगीताजीमां कह्युं छे. ॥श्लोक॥ **सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ॥ अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः ॥** अर्थ-बध्धा धर्मोने

छोडीने महारी एकनी शरण आव तो हुं तने सर्वे धर्म छोड्याना पापथी छोडावीश. तुं तेनी चिंता करमा. ॥ श्लोक ॥ **यानास्थायनरो रोराजन्नप्रमाद्येतकर्हिचित् ॥ धावन्निमिल्य वा नेत्रे नस्खलेन्नपतेदिह** ॥ अर्थ- हे राजा, जे धर्ममां सर्व प्रकारथी चाले तेमां प्रमाद एटले गाफलपणुं नथाय, अने आंख मींचीने दोडे, तोय पण पडे नहीं ए वचनोए करीने आचारादि धर्मो न होय तोय पण फलसिद्धि थाय छे. ॥ श्लोक ॥ **धर्मःसत्यदयोपेतो विद्यावा तपसान्विता ॥ मद्भक्त्यापेतमात्मानंनसम्यक्प्रपुनातिहि** ॥ अर्थ- सत्य अने दया सहित धर्म होय अने तपसहित क्रिया होय एटले ज्ञान होय तोयपण महारी भक्ति विनानुं जेनुं अंतःकरण होय तेने उपर कहेला धर्मो अने विद्या सारी रीते पवित्र करता नथी. ॥ श्लोक ॥ **धर्मःस्वनुष्ठितः पुंसां विश्वक्सेनकथासुयः ॥ नोत्पादयेद्यदिरतिं श्रमएव**

हि केवलम् ॥ अर्थ- धर्म सारी रीतनां कर्याहो-
य पण विश्वक्सेन जे भगवान् तेमनी कथामां मा-
णसोने रति पेदा नकरे तो केवल श्रमज छे ॥ श्लो-
क ॥ नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं नशो-
भते ज्ञानमलं निरंजनं ॥ कुतः पुनः श-
श्वदभद्रमीश्वरे नचार्पितं कर्म यदप्य
कारणम् ॥ अर्थ- जेमां कर्मनुं बंधन नथी पण
अच्युत जे भगवान् तेमना भावविनानुं छे तो नि-
र्गुण ज्ञान पण पुरुं शोभतुं नथी त्यारे सदा अ-
कल्याणरूप कर्म ते ईश्वरमां अर्प्युं नहोये तो
केम शोभे. ॥ श्लोक ॥ यमादिभिर्योगपथैः
कामलोभहतो मुहुः ॥ मुकुंदसेवया यद्व
थात्माद्धानशाम्यति ॥ अर्थ- यम नियम
वगेरे योगना मार्गो छे तेमणे करीने कामने लो-
भथी घडी घडी हणायेलो एवो जे आत्मा ते
शांत थतो नथी जेवा मुकुंद एटले मुक्ति आप-
नारा भगवान् तेमनी साक्षात् सेवाथी शांत थायछे.
श्लोक ॥ श्रेयःस्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो

क्लिश्यंति ये केवलबोधलब्धये ॥ तेषाम
सौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थू
लतुषांवघातिनां ॥ अर्थ- कल्याण जेमां-
थी स्रवे छे एवी तमारी भक्तिने छोडीने केवल
ज्ञानना लाभसारु जे मेहनत करे छे तेमने आ
जगत छे ते क्लेशवालुंज बाकीमां रहे छे. बीजुं
एने एमां कंई मलतुं नथी. जेम सालना फोतरा
खांडें तेमांथी अन्न मळे नहीं (इत्यादि वाक्य-
थी वळी पण बृहन्नारदीयना वाक्यथी.) ॥
श्लोक ॥ यथाजलौकसा नित्यं जीव-
नं सलिलं मतम् ॥ तथा समस्त जी-
वानां जीवनं भक्तिरिष्यते ॥ १ ॥ अर्थ-
जेम जलमां जेमनुं घर छे एवा माछला वगेरे
तेमनुं जीवन जे छे ते जल मानेलुं छे तेम बद्धा
जीवो जे छे तेमने भक्ति छे ते जीवन केहेवाय छे
इत्यादि वाक्यथी भक्तिरहित कर्मने असा-
धकपणुं होवाथी अने भक्तिसहित कर्मने
साधकपणुं होवाथी. ॥ श्लोक ॥ यत्कर्मभि

र्यत्तपसाज्ञानवैराग्यतश्च यत् ॥ सर्वंम द्भक्तियोगेन मद्भक्तो लभतेंजसा ॥ अर्थ जे कर्मेकरीने जें तपेकरीने ज्ञान अने वैराग्यथी योगेकरीने दानेकरीने धर्मेकरीने अने बीजां सारां कर्मोए करीने पण जे मलेछे ते महारी भक्तिथी महारा भक्तने वगर मेहनते मलेछे. ॥

श्लोक ॥ ज्ञाने प्रयासमुदपास्यनमंत एवं जीवंति सन्मुखरितां भवदीयवार्त्तां ॥ स्थाने स्थिताः श्रुतिगतां तनुवाङ्मनोभिर्यैप्रायशो जितजितोप्यसितैस्त्रिलोक्यां ॥ अर्थ- ज्ञानमां मेहनत छोडी दईने नमनज जे कर्या करेछे अने सत्पुरुषोनी कहेली आपनी अथवा आपना भक्तोनी वार्तानो अवलंब करीने पोताने ठकाणे रहीनेज कानमां सांभलीने शरीर मन अने वाणीथी जे जीवेछे ते हे अजित ते त्रैलोक्यमां न बंधाईने तेमणे तमने घणुं करीने जीत्याछे ॥ श्लोक ॥ अकामः सर्व कामो वा मोक्षकाम उदारधीः ॥ तीव्रे-

णभक्तियोगेन यजते पुरुषं परम्॥ अर्थ- कंई जेने जोतुं न होय अथवा सर्व जेने जोतुं होय अथवा मोक्ष जेने जोतो होय एवो जे उदार बुद्धिवालो मनुष्य ते आज्ञा भक्तियोगे करीने पुरुषोत्तमने भजेछे.॥श्लोक॥ किमलभ्यं भगवति प्रसन्ने श्रीनिकेतने॥ तथापि तत्परा राजन्नहि वांछंति किंचन॥ अर्थ- लक्ष्मीनुं जेनां हृदयमां स्थानछे एवा भगवान् ज्यारे प्रसन्न थया त्यारे नमले एवुं कंई नथी तोए पण हे राजा भगवानमां तत्पर थया ते कंई मांगता नथी॥ रूपमारोग्यमर्थानि॥ इत्यादि वाक्यथी केवल भक्तिनेज सकल साधकपणुं छे. एटले भक्ति बध्धुं सिद्ध करेछे. वली कह्युंछे.॥श्लोक॥ परिनिष्ठोपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया॥ गृहीतचेता राजर्षे आख्यानं यदधीतवान्॥ अर्थ- निर्गुण जे अक्षरब्रह्म तेनी परिनिष्ठा एटले पूर्ण ज्ञान ते रह्युं आवेछे, तोय पण उत्तमश्लोक

भगवान तेनी लीलाए जेना मनने पकड्युंछे. एवा जे शुकदेवजी ते ए कारणथी आख्या श्री भागवतने भण्या छे ॥श्लोक॥ **आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रंथा अप्युरुक्रमे ॥ कुर्वंत्यहेतुकीं भक्तिमित्थंभूतगुणो हरिः॥** अर्थ-आत्मामां रमण करनारा एवा मुनि एटले मननशील अने अभिमान विनाना छे तोयपण घणा चरित्रवाला भगवाननी वगर मतलबनी भक्ति करेछे एवाजहरिना गुण छे.॥श्लोक॥ **नैकात्मतां मे स्पृहयंति केचिन्मत्पादसेवाभिरतामदीहाः॥ येन्योन्यतो भागवताःप्रसज्य सभाजयंते मम पौरुषाणि॥** अर्थ-कोईक जे छे ते भगवानमां एक थई जवुं तेनी इच्छा पण नथी करता ते कपिलदेवजी कहेछे जे म्हारा छे अने म्हारा चरणनी सेवामां जेने आसक्तिछे ते भागवत बधा छे,ते भेला थईने परस्पर म्हारा पुरुषार्थवाला चरित्रने मान आपेछे. श्लोक

मत्सेवया प्रतीतंच सालोक्यादिचतुष्टयं॥ने
च्छंति सेवया पूर्णाः कुनोन्यत्काल विप्लुतं॥
अर्थ-मंहारी सेवाथी पूर्ण छे ते लोको महारी सेवा-
ए करीने सालोक्यादि जे चार मुक्ति अनुभवमां आ-
वेछे तेनी इच्छा करता नथी. त्यारे काळथी नाश थाय
एवानी इच्छा शेनीज करे? इत्यादि वाक्यथी एवुं
सिद्ध थायछे के भक्ति पोतेज फलरूप छे अने हम-
णां तो कर्मनो अनेज्ञाननो अधिकार जतो रह्यो छे.
अने भक्तिमार्गमां प्रवेश तो म्होटाना अनुग्रह-
थीज थायछे. त्यांहां कंई काळनो नियम नथी.
तेथी आ मार्गमां जेवा अधिकारी होय तेने तेवुं
उत्तम, मध्यम फलथायछे तेज वात तत्त्वदीपमां
कहीछे. श्लोक. **अधुना ह्यधिकारास्तुस
र्वएवगताःकलौ॥ कृष्णश्चेत्सेव्यते भ-
क्त्या कलिस्तस्य फलायही॥** हमणा क
लियुगमां ज्ञानमार्ग अने कर्ममार्ग अने भक्ति-
मार्गना बधा अधिकारो गया छे त्यारे भक्तिए
करीने जो कृष्णनी सेवा करे तो कली एने फ-

ल सारु छे तेथी भक्तिथी सिद्ध थाय एवुं फल बीजा थकी नथी मलतुं. बीजाथी सिद्ध थाय ते भक्तिनुं आनुषंगिक फल छे तेथी कर्मादि मार्गोनी बराबरीनो गंध पण भक्तिमार्गमां नथी. वळी शंका करेछे के पूर्ण भक्तिमार्गनुं अधिकपणुं छे तोए पण हमणा अर्धो करेलो भक्तिमार्ग तेने बीजा कहेला मार्गनी बराबरीपणुं छे एम कहे त्यांहां कहे छे. श्लोक.

नवैजनो जातुकथंचनाव्रजेत् मुकुंदसेव्यन्यवदंगसंसृतिं ॥ स्मरन्मुकुंदांघ्र्युपगूहनं पुनर्विहातुमिच्छेन्नरसग्रहोयतः

अर्थ-कोई तरेहथी मुकुंदनी सेवा करनारो बीजानी पेठे कोई वखत जनम मरण पामतो नथी. मुकुंदना चरण छे तेना आलिंगनना सुखनी इच्छा करतो छोडवानुं मन करतो नथी. केमके एमां एने रस आवेछे. ॥ श्लोक ॥ **कृष्णकृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः ॥ जलंभित्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम् ॥** अर्थ-कृ-

+ मोटुं फल मांगतां नाहानुं फल वचमां थईजाय ते.

ष्ण कृष्ण अने कृष्ण ए रीते रोज महारुं जे पुरुष स्मरण करेछे तेनो जलने चीरीने जेम कमल ऊंचुं निकळेछे तेम नरकथी उद्धार करुं छउं. श्लोक॥ **आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः॥ सारमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः सदा॥** अर्थः- बद्धा शास्त्रने डोहोल्या अने घडी घडी विचार्या तेमांथी सार एक पेदा थई आव्यो के नारायण जे भगवान् छे तेनुं सदा ध्यान करवुं. ए वचनोथी अरधो करेलो भक्तिमार्ग फलने सिद्ध करेछे. एवा बीजा मार्गो फलने सिद्ध करता नथी. तेथी वधारे शुं कहिये? हवे शंका करेछे के पुण्यदेशमां रह्याथी पुरुषार्थनी सिद्धि थायछे त्यारे एने जुदो पाडीने आश्रयनी प्रार्थना शुं करवा करोछो एवी आशंका करीने देशोने असाधकपणुं कहेतां आश्रयनी प्रार्थना करेछे ॥ मूल श्लोक ॥

म्लेच्छाक्रांतेषु देशेषु पापैक-
निलयेषु च॥ सत्पीडाव्यग्र-

लोकेषुकृष्णएवगतिर्मम॥२॥

अर्थ - म्लेच्छ लोकोना हाथमां आवेला देश थया छे अने पापरूप लोकोना घररूप थया छे अने सत्पुरुषोने पीडा थायछे. तेथी धर्म करवामां लोकानां मन ऊंचा थईगया छे. त्यारे कृष्णज महारी गति छे. म्लेच्छथी आक्रांत देश थया एटले म्लेच्छना हुकममां आव्या. वादी शंका करेछे के, म्लेच्छ पण न्यायवर्ती होयछे त्यारे शुं दोष? एम कहे त्यांहां कहेछे पापनुं घर थयुं एटले ए म्लेच्छ छे तेज पापरूपछे तेमनुं ए घर छे अथवा पापनुं घर छे अथवा देश कह्या ते पापनां ज घरछे जेमके अंगवंगादिक देश तेमां गयाथी फरी संस्कार करवो पडेछे. लोक बधा वाणिया वगेरे सारा होयतो म्लेच्छनी साथे शुं काम? एम कहे त्यांहां कहेछे जे धर्म करनारा जे सारा माणस तेने दुःख थायछे ते जोईने एमना चित्त व्यग्र थया. व्यग्र एटले धर्मनुं आचरण करवुं एज दुःखनो उपाय तेथी ए धर्म

करवो के नहीं अने लौकिक करिये नहीं एम व्याकुल थई तेमनी आसता घटी गई छे अने सतधर्म छे ते सारुंज करेछे एवो निश्चय नथी तेथी ए बधा साहे करे एवुं नथी. अने श्री भागवतमां कह्युं छे ॥ श्लोक ॥ **अहो अमीषां किमकारी शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः ॥ येर्जन्मलब्धं नृषु भारताजिरे मुकुंदसेवोपयिकं स्पृहा हि नः ॥** अर्थ - आ ते शुं बधाए सारु कर्युंछे? के हरी जे दुःखहर्ता भगवान् ते एमनी उपर प्रसन्न थयाछे? केम के तेमणे भरतखंडरूपी आंगणामां जन्म लीधोछे अने मुकुंदना चरणनी सेवा करेछे अने अमने तों मुकुंदना चरणनी सेवा करवानी इच्छा छे. एम देवता कहेछे तेथी भरतखंड मुकुंद जे भगवान तेनी सेवा करवामां साहेछे. पण म्लेच्छे करीने आक्रांत छे तेथी श्रीकृष्णज महारी गती थाओ. वळी कहेछे जे गंगादिक तीर्थछे तेमनाथी बध्धा पुरुषार्थ सिद्ध थायछे. त्यारे

आश्रय करीने शुं? त्यांहां कहेछे जे कोई काळमां कोई देशमां आश्रयनुं रूप बदलतुं नथी अने बीजी बध्धी वस्तुनुं स्वरूप बदली जायछे तेथीं आश्रय ज मुख्य छे तेथी ऊपली आशंकामां द्रव्य एटले जगाशोने असाधकपणु कहेतां तीर्थोनुं स्वरूप कहेछे.

॥ मूलश्लोक ॥

गंगादितीर्थवर्येषु दुष्टैरेवावृतेष्विह॥ तिरोहिताधिदैवेषु कृष्णएव गतिर्मम ॥ ३ ॥

अर्थ- तीर्थोमां श्रेष्ठ एवा जे गंगादिक तीर्थो ते दुष्टे करीने वीटेला छे तेथी तीर्थोनुं आधिदैविकपणुं छुपी गयुंछे तेथी कृष्णज म्हारी गति थाओ. केमके गंगादिक बध्धा तीर्थोथी बध्धा पुरुषार्थोनी सिद्धि थायछे त्यारे केवल आश्रय करीने शुं एवी शंकामां कहेछे जे तीर्थो तेमां गंगादिक बध्धा तीर्थोथी श्रेष्ट ते दोषवाला लोकोथी वीटाई गया छे तेथी एमनाथी पुरुषार्थोनी सिद्धि थती नथी. शंका करेछे के दोषवालाथीज वीटायेला केम? त्यांहां ब्राह्मणादिक प-

ण रहेछे एवी शंकामां कहेछे जे तीर्थोनो अति परिचय तेथी तेमनी भक्ति रेहेती नथी अने दान प्रतिग्रह लेछे तेथी ते ब्राह्मणोमां पण दुष्टत्व थईजायछे. वळी कह्युंछे ॥ श्लोक ॥ सर्वेण गांगेन जलेन सम्यक् मृत्स्नाशतेनाप्यथ भावदुष्टः ॥ आजन्मनः स्नानपरोपि नित्यं न शुद्ध्यतीत्येववयं विदामः ॥ अर्थः- सर्व गंगाजले करीने सारीरीते सोवखत माटीए धुओ तोयपण भावदुष्टछे तेथी शुद्ध थतो नथी. श्लोक. ॥ मत्स्यकच्छपमंडूकास्तोये मग्ना दिवानिशं ॥ वसंते पिचते स्नानात्फलं नार्हंति कर्हिचित् ॥ अर्थ- काछबा माछला देडकाओ जलमां रात्रदिवस बुडेला रहेछे तोयपण ए तीर्थनुं फलपामता नथी. वळी श्लोक ॥ श्रद्धाविधिसमायुक्तं यत्कर्म क्रियते नृभिः ॥ शुचिशुद्धेन भावेन तदानंत्याय कल्पते ॥ अर्थ- श्रद्धा अने शास्त्रनो बतावेलो विधि ते प्रमाणेज

जे कर्म करेछे ते सर्व फलने पामेछे. वली श्लोकं
विधिहीनं भावदुष्टं कृतमश्रद्धयाच यत् ॥ तद्धरंत्यसुरास्तस्य मूढस्याकृतात्मनः ॥ अर्थ- विधि विनानुं होय अने भावदुष्ट
होय अने अश्रद्धाथी करेलुं होय अने जेणे एमां
विचार नथी वापर्यो एवो मूढ करनार तेनुं करे-
लुं कर्म दैत्यो हरी लेछे एम याज्ञवल्क्य ऋषिनुं
वचन छे. वळी श्लोक ॥ अश्रद्धधानः पापात्मा
नास्तिकोच्छिन्नसंशयः ॥ हेतुनिष्ठश्च पंचैते न तीर्थफलभागिनः ॥ अर्थ- श्रद्धा वि
नानो पापबुद्धि नास्तिक अने जेना संदेह कपा-
या नहोय अने हेतुनिष्ट होय ए पांच जणा तीर्थ-
ना फलने भोगवनारा नथी एवुं वायुंपुराणनुं
वचन छे. वळी श्रीमद्भागवतमां कह्युंछे. श्लोक
प्रायश्चित्तानि चीर्णानि नारायणपराङ्मुखं ॥ न निःपुनंति राजेंद्र सुराकुंभमिवापगाः ॥ अर्थ- हे परीक्षित राजा प्राय-
श्चित्त पण भगवानथी बहिर्मुख छे तेनुं पाप

दूर करता नथी. जेम मदिरानो घडो गंगाजळ-
मां बोळी राखे तोयपण शुद्ध थतो नथीं तेथी
तीर्थो भगवानथी बहिर्मुखपणाने तथा नास्ति-
कपणाने मटाडता नथी. वादी शंका करेछे जे
वस्तुनी शक्ति छे त्यारे एम केम थाय. जेमअ
ग्नि कोई वखत बाळतो नथी एम नथी थातुं ए-
म कहे त्यांहां कहेछे जे तीर्थोनुं आधिदैविकप-
णुं जतुं रह्युं छे. तेथी कहेछे जे दोषवाला होयछे
तेमनी आगळ आधिदैविक देवता जती रहेछे जे-
म कलियुगने परीक्षित राजाए छ ठेकाणा आ
प्या तेथी एम थयुं के कलियुगनो समय कंई
जतो न रह्यो पण तेनुं आधिदैविकपणुं न रह्युं
तेम आंई पण दुष्ट जीवो पासे आधिदैविक-
पणुं छुपी जायछे अने सत्पुरुषो आगळज आ-
धिदैविकपणुं रहेछे अने श्रीमद्भागवत तत्वदीपमां
श्रीआचार्यजी आज्ञा करेछे. श्लो०॥ तीर्थादावपि या
मुक्तिः कदाचित्कस्यचिद्भवेत्॥ कृष्णप्र-
सादयुक्तस्य नान्यस्येति विनिश्चयः॥

अर्थ- तीर्थादिकमां मुक्ति ते कोईकनेज थायछे ते जेना उपर कृष्णकृपा होय तेनेज थायछे तेज कारण-थी ते स्नाननी प्रशंसा छे. ॥श्लोक॥ **भवद्विधा भागवतास्तीर्थीभूताः स्वयं विभो ॥ तीर्थीकुर्वंति तीर्थानि स्वांतःस्थेन गदाभृता ॥** अर्थ-गदाना धारण करनारा भगवान् जेना हृदयमां रहेछे ते तीर्थोने तीर्थीभूत करेछे एटले तेमांथी आधिदैविकपणुं जतुं रह्युं ते भगवद्भक्त लावेछे तेथी कृष्णज छे तेज म्हारी गति थाओ. हवे करनारो सारो होय तो बध्धां फल थाय तेथी आश्रय करीने शुं? त्यांहां कर्ताने असाधकपणुं कहेतां आश्रयनी प्रार्थना करेछे. ॥मूलश्लोक॥

अहंकारविमूढेषु सत्सु पापानुवर्तिषु ॥ लाभपूजार्थयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम ॥ ४ ॥

अर्थ-पंडित अहंकारथी मूढ थई गया छे. अहंकार एटले अमेज शास्त्रने जाणिये छैये एवो एमां गर्व थयो छे तेथी बीजा कोईने पूछता नथी. तेथी

तेमनुं ज्ञानज दुष्ट थयुं अने तेमनी कृति पण दुष्ट थई गई छे जे पोताने पैसानो लाभ थाय अने पोताने मान मले एंटला सारुज यत्न करेछे. पारमार्थिक कर्म करेछे ते पण लाभ पूजा सारु करेछे. अने पापी एवा दुष्ट माणसोनी मर्जी प्रमाणे चालेछे अथवा पाप प्रमाणे चालनारा एवा थंया छे तेथी एक संगदोष अने बीजो अन्नदोष तेथी पोतानी मेळे फल करी ले एवा रंह्या नथी. अने ज्यारे कृष्णनो आश्रय थाय त्यारे भगवत्कृपाए करीने वेदनो अर्थ अने पोतानो दोष तेने जाणवा मांडे त्यारे फलसिद्धि थाय केमके भगवान् अथवा भगवदीय वेदना अर्थने जाणेछे तेथी वेदना तात्पर्यनुं ज्ञान भक्तनेज थायछे तेथी कृष्ण छे तेज म्हारी गति थाओ. वळी पहेलानी पेठे आशंका करेछे. त्यांहां मंत्रोने असाधकपणुं कहेतां आश्रयनीज प्रार्थना करेछे.

॥ मूल श्लोक ॥

अपरिज्ञाननष्टेषु मंत्रेष्वव्रतयोगिषु ॥ तिरोहितार्थदेवेषु कृष्ण

एव गतिर्मम ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ- चारे तरफथी ज्ञान नथी तेथी मंत्रबधा नष्ट थयाछे अने वळी व्रत विनाना माणसोने मल्याछे तेथी मंत्रनो अर्थ अने मंत्रनी देवता छुपी गई छे ते-थी कृष्णज महारी गति थाओ. कहेछे जे मंत्र बधा नष्ट थया तेथी आश्रंयनेज मागेछे. हवे मंत्रो ते वैदिक अने आगमज्ञानं एटले नारद पंचरात्रादिकना ते-नुं अपरिज्ञान थयुंछे एटले तेनो मतलब शुं; तेनो देवता कोणछे, तेनुं फल शुं अने स्वरूप केवुं तेनुं ज्ञान नष्ट थयुंछे अने गुरुकुलनो वास अने ब्रह्मचर्य अने शूद्रनुं असान्निध्य एटले शूद्रना आगल नहीं अने अनध्यायना दिवसविना ए रीते जे भण्या होय तेने साधकपणाए करीने अव्रतयोगी आ उपर लखेला वनाना माणसो ते भण्या होय तो-य मंत्रसिद्धि करनारा थता नथी. अने भगवदाश्रय थाय त्यारे तो नीचेना श्लोक प्रमाणे. ॥ श्लोक ॥

यस्य स्मृत्याच नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वंदे तम

च्युतम्॥ अर्थ- जेना स्मरणथी, नाम कह्याथी, तप, मंत्र अने जप विगेरेथी अधुरुं होय ते संपूर्ण थायछे एंवा अच्युत भगवान् तेमने हुं नमस्कार करुं छउं. इत्यादि वचनो थकी मंत्र पण सिद्धिने आपेछे. वादी शंका करेछे के मीमांसादिकछे ते- णे करीने मंत्रना तात्पर्यनो निर्धार थाय त्यारे कर्मे करीने सिद्धि छे त्यारे आश्रय करीने शुं एवी आ- शंकामां कर्मने असाधकपणुं कहेतां आश्रयनी प्रार्थना करेछे

॥मूल श्लोक॥

नानावादविनष्टेषु सर्वकर्मव्र-
तादिषु॥ पाखंडैकप्रयत्नेषु
कृष्णएव गतिर्मम॥६॥ ॥

अर्थ- नाना प्रकारना वादोए करीने विशेषे करी- ने सर्व कर्म अने व्रत नाशने पाम्याछे अने मनु- ष्यो पाखंडमांज प्रयत्नवाला थतां कृष्णज म- हारी गति थाओ. कर्मजे सोमयागादि अने व्र- तोछे ते बध्धामां प्रपंच एटले जगत् ते खोटुंछे

वेद खोटा एम जेना मनमां मिथ्यापणुं थाय त्या
रे जगत कल्पेलुं छे वेदनो व्यवहारमात्र खरो छे स्व
प्नरूपछे वास्तविक कंई नथी एवो केटला एक-
नो वाद छे. ब्रह्मानो आ यज्ञ छे एम कहीने यज्ञ
करेछे तेनी वासना रहेछे तेथी बीजा जन्ममां य-
ज्ञ करेछे तेथी मंत्रे करीमेंज फल थायछे. ब्रह्मा-
जीने पण कर्मे करीने फल थायछे. कंई उपा-
सनाथी नथी थातुं. कोई देवता आपती नथी
पण कर्म कर्याथी तेनुं फळ आपनार जोइये
अथवा ए कर्म करनारने सुझाडनार जोइये
ते पण चैतन्य नथी त्यारे ए देवता मंत्रमयी छे
तेथी फल मलवामां देवतानी प्रीतिए व्यापार
नथी एटले प्रीतिथी आपेछे एम नहीं. तेम दे-
वतानी प्रीति छे ते फल नही एम केटलाकनो
वाद छे अने केटलाकनो वाद छे के शास्त्रथकी
सोळ पदार्थोनुं ज्ञान थाय तेनो विवेक थया
पछी श्रवण मनन अने निदिध्यासे करीने पो-
ताना आत्मानो साक्षात्कार थाय. त्यारे दुःख-

नो अत्यंत अभाव थाय तेज फल कंई भगवान सेवा करवालायक छे के भगवान फलछे एम नहीं एम केटलाकनो वादछे अने वळी प्रकृति अने प्रकृती नो विकार तेनी उपाधि तेनो लय थाय त्यारे जेम काच अने तेनो विकार जे मोहडुं देखावुं तेनो लय थाय त्यारे आपणे रही जाइए तेम पुरुष पोताना रूपे करीने रेहे एज फल भगवान नही एम केटलाकनो मत छे तेणे करीने कर्म अने व्रतादिक बहु नाश पाम्या ते विनाश केम थाय ते कहेछे जे अवळा अर्थनो निश्चय करीने फल पेदा नकरे एटले नाशज थयो पण वस्तुतः वेदमां कहेछे जे पुरुषजछे एटले भगवदरूपज आजगत छे. सर्वने वशमां राखनारा सर्वना कारण एज भगवानजेने ऊंचो लई जावो होय तेनी पासे सारा कर्म करावेछे अने एज भगवान् जेने नीचे लई जावो होय तेनीपासे बुरु करावेछे वळी वाक्य छे.॥ श्लोक॥

अहंसर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते॥ इतिमत्वा भजंते मां बुधा भावसमन्विताः॥ अर्थ-

हुं बधाने पेदा करनारो छऊ अने महाराथी बधुं प्र-
वृत्तथायछेएम मानीने पंडितोछेते भाववाला थई-
ने मने भजेछे ॥ श्लोक॥ कोनुराजन्निंद्रियवान्
मुकुंदचरणांबुजं ॥ न भजेत्सर्वतो मृत्युरुपा-
स्यममरोत्तमैः ॥ अर्थः-हे परीक्षित अमरोमां
उत्तम तेने भजवालायकछे एवा मुकुंद जे मुक्ति
आपनारा भगवान् तेने आ जे चारे तरफ मृत्यु
वालो छे ते केम न भजे. वली श्लोक॥ देवोसुरोम-
नुष्योवायक्षोगंधर्वएवच ॥ भजन्मुकुंदचर
णंस्वस्तिमान्स्याद्यथावयं॥अर्थ-देव असुर म-
नुष्य यक्ष गंधर्व ए बधा मुक्ति आपनारा भगवानने
भजे तो सखी थाय जेम अमे सखी थया छे एम प्र-
ल्हादजीनुं वाक्य छे. वली व्यास सूत्र छे- फलमत
उपपत्तेः त एनंतृप्ताः देवा वै सत्रमासते विशते त-
दनंतरं मामेवैष्यसि आनंदं ब्रह्मणोरूपं ए विगेरे श्रु-
ति अने स्मृतिए करीने प्रपंच छे ते ब्रह्मरूपछे सत्य
छेतेथी करवानुं छे ते सफल छे अने भगवान सर्व
ना ईश्वर छे सेवा करवालायकछे प्रवर्तकछे अने फ

ळदाता छे अने तृप्ति थवी अने यज्ञ करवो खोटुं हो-
य तो घटे नही अने देवताने चैतन्यपणुं छे तेथी भग-
वानमां सायुज्य थवुं ते मोक्ष छे अने भगवान आनं
दरूप छे तेथी भगवानने फलरूपपणुं छे माटे पेहेला
कहेला वाद बकवाद जेवा छे .अने पोताना मतना आ
ग्रहे करीने जे निषिद्ध एवा दशमीथी विद्धा एकाद-
शी वगेरे व्रत करेछे - व्रतादीने कर्मपणुं छे तोय पण
तेने जुदा उपादान कीधा ते व्रतोने ज्ञानना अंगप-
णानो बोध थवासारु शंका करेछे के ते पोते करेछे
अने बीजाने पण बोध करेछे . मिथ्या जाणे अफ-
ल जाणे अल्प फळवालुं जाणे अने एमां आनंद
नथी एम जाणे तो पोते केम करे अने बीजाने पण
बोध केम करे अने वळी ते मती शंकर जैमिनी
गोतमादि विगेरेना चलावेला छे एवी शंकामां क-
हेछे के पाखंड चलाववासारु एटले पाखंड निमि
त्तज मुख्य प्रयत्न छे जेनो तेउपर श्लोक कहेछे .

त्वंच रुद्र महाबाहो मोहशास्त्राणि कारय ॥
अतथ्यानि वितथ्यानि दर्शयस्व महामते ॥

अर्थ-हे रुद्र महाबाहो महामतीवाला तुं मोहशास्त्र कर. साचा तथा खोटा मोहशास्त्र देखाड. श्लोक. त्वामाराध्य तथा शंभो गृहिष्यामि वरं सदा ॥ अर्थ-हे शंभु, तारु आराधन करीने हुं सदा वरदान लईश. ए बे श्लोकोए करीने भगवाने महादेवप्रती तेज रीते आज्ञा करी छे. तेथी ते तेमज प्रवृत्त थाय छे. पोते कर्म करे छे तेथी अने पोतानी म्होटाई प्रसिद्ध करीने पोताना मत चलावे छे त्यारे जेनुं म्होटा आचरण करे ते इतर जन करे अने म्होटा जेने प्रमाण कहे ते प्रमाणे लोक चाले ए न्याये करीने हमणाना जीवोने एमणेज मोहित कर्या छे. कंई देवादिकना चलावेला शास्त्रपणामात्रथीज खरापणुं नथी ठरतुं पण वेदनो विरोध नथईने वेदानुसारीपणाथी खरापणुं ठरे छे. नही तो बृहस्पतिनो चलावेलो चार्वाकमत तथा बौद्धमत पण सन्मत गणाय तेथी युक्तिप्रयुक्ति कर्याथी शुं? घणुं थयुं तेथी कृष्णज महारी गति थाओ. वादी शंका करे छे- श्रुतिओ धर्मेण पापमपनुदति धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं. एटले धर्मे

करीने पापने दूर करेछे. अने धर्ममां बध्धुं रह्युंछे
इत्यादि श्रुतिओ छे. तेथी पहेला दोष मटवा सारु
धर्म करे अने चित्तनी शुद्धि थाय त्यारे भगवान-
नुं माहात्म्य तथा स्वरूप जाणे अने निर्दोष थाय
त्यारे आश्रयादिकने करवापणुं छे पण दोषवा-
लो होय त्यारे न करवो: अने एम न होय तो यो-
गीने ध्यान करवा लायक भगवान् क्यांहां अने
आ दुष्ट जीव क्यांहां एवी आशंकामां कहेछे. यमे
वैष वृणुते तेन लभ्य एटले जेने पोतानो मानीने
अंगीकार करेछे तेने मलवा लायक छे. वळी श्री
गीताजीनो श्लोक ॥ नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन
नचेज्यया ॥ शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि
मां यथा ॥ अर्थ-हुं जेवो तने देखाऊं छऊं तेवो वे-
दे करीने तपस्याए करीने दानथी पूजाथी जा-
णवाने जोवाने अने प्रवेश करवाने शक्य नथी
श्लोक ॥ रहूगणै तत्तपसा न याति न चेज्यया
निर्वपणाद्गृहाद्वा ॥ न छंदसा नैव जलाग्नि
सूर्यैर्विना महत्पादरजो भिषेकं ॥ अर्थ-हे र-

हुगण, तपस्याए करीने यज्ञे करीने सन्यासे करीने घरमां रह्याथी वेदे करीने जल अग्नि अने सूर्य इत्यादिके करीने मलतो नथी. म्होटाना पादरजना अभिषेक विना एटले मोहटाना पादनी रजना अभिषेके करीनेज मलुं छऊं. ते विना मलतो नथी. ए वचनोएं करीनें भगवानना अंगीकार करवार्थी म्होटाओंना अनुग्रहे करीने जेने भक्ति थई होय एवो दोषवालो पण भगवान् पासे जवालायक थायछे अने भगवाननुं माहात्म्य पण एवुंछे तेथी महा पुरुषद्वाराज शरण आवेथी बधुं थशे. एमजाणीने भक्तोने चार पुरुषार्थ भगवान जछे तेथी भगवानने धर्मरूपपणुं कहेतां आश्रयनेज मागेछे.

॥ मूलश्लोक ॥

अजामिलादिदोषाणां नाशको
नुभवे स्थितः ॥ ज्ञापिताखिल-
माहात्म्यः कृष्णएवगतिर्मम ॥

अर्थ- अजामिलादिक पापी तेना दोष मटाड्या

तेथी भगवाने पोतानुं म्होटापणुं बताव्युं छे. एवा जे श्रीकृष्ण तेज म्हारी गति थाओ एम प्रार्थना करीछे. हवे टीका करेछे जे अजामिलादिकना दोषना नाश करनारा ए रीते अनुभवमां आव्याथी पापने मटाडनार अने इच्छित आपनार भगवानछे तेथी ए धर्मनुं कार्य तेनुं भगवानज करेछे तेथी ज्यारे दोष ऊभा थाय अथवा कामक्रोधादिक बाधा करे त्यारे जेणे समर्पण कर्युं होय एटले भगवदीय, तेने प्रायश्चित्तादिक न करवा पण भगवदाश्रय करवो बीजो अर्थ कहे छे के भगवान पोताना संबंधथी निर्दोष करे तेमां शुं पण परंपरा संबंधथी पण करेछे जेम नामनो संबंध भगवाननी साथे अने पुत्रनो संबंध नामनी साथे तोपण अजामीलनो उद्धार कर्यो. एम परंपरा संबधथी करेछे तेथी म्होटाना अनुग्रहे करीने पोतानुं महात्म्य जेणे जणाव्युंछे तेज म्हारी गति थाओ. शंका करेछे के स्वाध्याय एटले वेदनुं भणवुं अने जे जे यज्ञ भणे ते ते

यज्ञनुं फल तेने थाय अने अग्नि वायु अने सूर्य.
तेना सायुज्यने पामे एटले तेमां मली जाय तेथी क-
र्ममार्गमां ब्रह्मयज्ञादिकना भणवाथी अग्न्यादिकनुं
सायुज्य थायछे अने वळी कह्युं छे. श्लोक ॥ गीताजी.
॥ येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ॥ सर्व-
त्रगमचिंत्यंच कूटस्थमचलं ध्रुवं ॥ सन्नियम्यें
द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ॥ ते प्राप्नुवंति मामे
व सर्वभूतहितेरताः ॥ अर्थ- अक्षर एटले न बतावाय एवुं
अने अव्यक्त एटले कोई इंद्रिये करीने जाणवामां न आवे
अने बध्धी जगाए व्यापक छे. अने चिंतवनमां आवतुं न
थी अने बध्धा जगतरूपी समूहमां रहेलुंछे अने क्यां
हेथी खसतुं नथी अने सदा छेज. एनी बध्धी इंद्रियो
वशमां करीनें जे चारे तरफथी उपासना करेछे अने
जे बध्धामां समबुद्धि राखेछे. अने सर्व प्राणिमात्र-
नुं सारुं करवामां आसक्त छे ते अक्षररूपी जे हुं
तेने पामेछे. ए वचनथी अक्षरना ज्ञाने करीने अक्षर-
ने पामेछे. त्यारे कृष्णाश्रयमां शुं वधारेछे, त्यारे
आश्रय शुं करवा मांगेछे, एवी आशंका करीने कृ-

ष्णना अने अक्षरना आश्रयने बताववासारु अर्थ रूप पणुं कहेतां आश्रयने मागेछे.

मूल श्लोक.

प्राकृताः सकलादेवा गणितानंदकं बृहत्॥ पूर्णानंदो हरिस्तस्मात्कृष्ण एव गतिर्मम॥ ॥

अर्थ- सर्व देवो तो प्राकृत छे अने बृहत् जे अक्षर ते प्राकृत नथी तो पण एनो आनंद गणत्रीमां आवे एटलोछे अने हरिछे ते पूर्णानंद छे एटले अगणित तेमनो आनंद छे तेथी कृष्णज म्हारी गतिथाओ हवे टीकाकार लखेछे के बद्धा देवछे ते सात्विक अहंकारथी थयाछे तेथी प्राकृतछे अने अक्षरब्रह्म गणितानंद छे.वेदमां कहेछे जे ए आनंदनी गणना छे.प्रजापतिना सो आनंद ते अक्षरनो एक आनंद गणेलोछे. अने हरि पूर्णानंदछे एटले जेमां पूर्ण आनंद छे अथवा जेथी पूर्ण आनंद थायछे अथवा जे ठेकाणे पूर्ण आनंदछे तेथी कृष्णज म्हारी गति थाओ. हवे देवादिकनुं सायुज्य थाय तो तेबद्धा प्रकृतिमां रह्याछे तेथी तेमां मुक्ति थवी ते सगुण मुक्ति छे. श्लो. आ-

ब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनोर्जुन॥ मामुपेत्यतुकौं-
तेयपुनर्जन्मन विद्यते॥ अर्थ-ब्रह्मलोक सुधी जे लोक
छे ते फरी जन्मने पामेछे अने मने पामेछे तेनो फरी ज-
न्म नथी थातो. एवचनेकरीने बीजा देवनी मुक्तिमां फरी
जन्म थायछे अने आनंद पण थोडो छे तेथी स्वर्गमां
मुक्ति नथी तेथी तामसं पुराणजे महादेवनां छे तेमां प-
ण अने ब्रह्माना पुराणमां पण अने विष्णुपुराणमां
पण मुक्ति छे पण तेनो निबंधमां श्रीआचार्यजीए
अर्थ कर्योछे जे तामसवाला धर्मेकरीने मुक्तिने पा-
मेछे ते तेमनो तमोगुण मटीजईने राजस गुणमां आ-
वेछे तेमज राजसवाला तेमनो रजोगुण मटीजईने स-
त्वगुणमां आवेछे. ज्ञानमार्गथी अक्षरनी मुक्ति छे.
अने निर्गुणपणुं छे. पण आनंद गणित छे तेथी भुख्यो
होय तेने थोडुं जमाडवुं ते न जमाडवा जेवुं छे तेथी अप्र-
योजक छे. मूलश्लोकमां क प्रत्यय छे ते न जाणेला बा-
बतमां अने अल्पना अर्थमां छे तेणे करीने पुरुषोत्तम
करतां अव्यक्तपणुं अने अल्पपणुं सूचन कर्युं अने
पूर्णानंदपणाथी अने निर्गुणमुक्ति आपनार पणा-

थी कृष्णज महारी गति थाओ अने श्री आचार्यजीए आज्ञा करी छे के निर्गुण मुक्ति तो कृष्णथीज थायछे अने सगुण मुक्ति बीजा देवथी थायछे. शंका करेछे. श्लोक श्रीमद्भागवते. ताविमौ वै भगवतो हरेरंशाविहागतौ ॥ भारव्ययाय च भुवः कृष्णौ यदुकुरूद्वहौ ॥ अर्थ- यदुवंशना कृष्णजे श्रीकृष्ण अने कुरुवंशना कृष्ण जे अर्जुन ए बे हरिना अंश आव्या छे ते पृथ्वीनो भार हरवा सारु आव्या छे तेथी. श्लोक. बभौ भूः पक्वसस्याढ्या कलाभ्यां नितरां हरेः ॥ अर्थ-पृथ्वी जे श्रीवृंदावन तेमां अन्न बहु पाक्युं छे तेथी खुब भराई छे ते सदा हरिनी कला बे तेथी शोभेछे तेथी अने देवतानी देहछे तेमां पण पांच भौतिकपणुं छे अने जन्म मरण थवाना योग्यपणानो नियम एमां छे तेणे करीने जन्म मरणनुं श्रवण थाय छे अने सुख ए आत्मानी जणाश छे ने देहथी जूदी छे तेथी कृष्णने पूर्णपणुं केम अने आनंदरूपपणुं केम अने आनंदवाला केम अने

आनंदआपनारा केम कही शकाय एवी शंकामां कहेछेजेए
वचनना अर्थनुं ज्ञान नथी थयुं तेथी अर्थ जा-
ण्या विना शंका न करवी केम के भगवान छे
ते भक्तनुं दुःखना श करवा अने सुख आप-
वा सारु प्रकट्या छे . पृथ्वी भक्त छे तेनो भार
दूर करवा सारु आ कृष्ण अने अर्जुन ए बे
हरिना अंश पण छे ते आव्या छे तेथी हरिना
अंशे ए बेमां प्रवेश कर्यो छे तेथी कृष्ण पू-
र्ण छे तेमां यदुवंश पणुं के कुरुवंश पणुं नथी
आव्युं ते ते काम करवा सारु व्यूहमां ते ते भ
गवानना अंशनी गरज रहेछे तेथी ए बेने
संकर्षणना अंशपणाए करीने पृथ्वीनो भा
र हरवा सारुं काम पडे छे ए अंशने अवतार
पणुं होय अने पूर्ण पणुं होय नही तो कहे-
लुं छे के कृष्ण भगवान पोते वसुदेवना घर-
मां परपुरुष थया छे ए वाक्योनो विरोध
आवे आंई चकार छे ते बे अर्थने बतावेछे
तेथी एक अर्थ होय तो चकार व्यर्थ जाय

तेथी तत्वद्वीपमां कह्युं छे.॥श्लोक॥सर्वा ति रिक्तरूपेणनरःस्वावेश धारकः॥तपो- तिरिक्तं कार्यंतु कृष्णे पूर्णेनंचान्यथा॥ अर्थ- बध्धाथी जुदा रूपे करीने नर छे ते पोता- नो आवेश धारण करे छे.तेथी नरनारायणप- णाथी जे जुदुं कार्य ते पूंर्णनुंज छे एनो संक्षिप्त अर्थ ए छे के बधुं करनारपणाए करीने नाराय- ण छे अने पुष्टिकार्य करनार पुरुषोत्तम छे अ- ने नर छे ते पोतानो आवेश छे ते कंई अवतार नथी. वळी श्री भागवतमां कह्युं छे. श्लोक. ताविमौवै भगवतो हरेरंशाविहागतौ॥ भारव्ययायच भुवः कृष्णौ यदुकुरूद्वहौ॥ अर्थ- यदुवंशना कृष्ण जे श्रीकृष्ण अने कुरुवं- शना कृष्ण जे अर्जुन ए बे हरिना अंश पण आव्या छे ते पृथ्वीनो भार हरवा सारुं आव्या छे तेथी कृष्ण भगवान् पोते आव्या छे तेनो विरोध आ- वे त्यारे बे कारण सारु प्रकट्या छे तेथी पूर्ण कृष्ण छे तेमां नरनारायण पेग छे तेथी पूर्णवि

ना कार्य थतुं नथी अने पृथ्वी बे कलाथी शो-
भेछे ते ठेकाणे हरिनी पृथ्वी तेज ते कलाए क-
रीने एटले आपना चरणारविंद रह्या छे तेथी
शोभेछे एवो अर्थ छेनहीतो कहेला वचननो
विरोध आवे. देह तो पंचमाहाभूतनो होयछे.अ-
ने जन्म ले एवो छे ते वातनों प्राकृत देहमां निय -
म छे अने अप्राकृत छे तेमां ए नियम नथी
तेनुं स्वरूप वेदथी जणायछे केम के ज्ञानं इ-
च्छा अने प्रयत्न ए अनित्य छे अने न्यायवा-
ला जे छे ते भगवानना ज्ञान इच्छा अने प्रय-
त्न तेने नित्य मानेछे अने आ देह भगवाननी
छे तेने न्यायवाला अनित्य मानेछे. पण जेम
ज्ञान इच्छा अने प्रयत्न भगवानना छे तेने
नित्य मानेछे तो आ देह भगवाननी छे तेने
नित्य मानी जोइए. अने तेमनो जन्म छे ते दे-
खाडवामात्र छे कंई जन्म नथी. प्राणी मात्र
आनंदथीज पेदा थायछे. नित्य ज्ञान अनेआ-
नंदरूपी ब्रह्मछे जेम सैंधवनो कटको होय ते-

मां अंतराय नथी. बाहेर अने भीतर सरखो होयछे. अने रस घन होय ते माही अने बाहेर सरखो होयछे तेम भगवान छे ते अनुभवमां केवल आनंद मात्र छे. आनंद मात्र करपाद मुखोदरादिए नारद पंचरात्रनुं वचन छे. अने गर्गाचार्ये कह्युं छे के तमारा पुत्रना नाम अने रूप ते गुणकर्मने अनुसार घणां छे. अने वेदत्रण अने उपनिषद विगेरे जेनुं वर्णन करेछे. एवा भगवानने पोताना दिकरा मानी जेम प्राकृत बालकने बांधे तेम बांध्या एम श्रुति न्याय अने व्याससूत्र अने पुराणोना हजारो वाक्योए करीने अने प्रमाण प्रकरणनी लीलाए करीने पण देह प्राण इंद्रिय अने अंतःकरणरूपी पूर्ण पुरुषोत्तम छे तेमां आत्माज पूर्ण पुरुषोत्तम छे एम नथी पण ए बध्धुं पुरुषोत्तम छे एम निर्बाध शास्त्र बोध करावेछे. सत्य विज्ञानमय अने आनंदमय स्वरूप कह्युं तेथी नित्य छे अने पूर्ण छे अने भवानेकः शिष्यते शे-

षसंज्ञ. एष एवानंदयति इत्यादि श्रुतिए करी-
ने नित्य छे अने आनंदने पेदा करनार छे. वळी कह्युं
छे. जातहर्ष मुदितवउपयाति वीक्ष्यांसिंदुत्तमा-
प्रीति कृष्णःप्रीतमनाः इत्यादिक श्रुतिथी आनंदरू
प छे तेथी न घटे एवुं कंई नथी तोपण आनंदपणा-
ने अने देहपणांने विरोध आवे एम कहे त्यांहां कहे-
छे के पोतपोताने ठेकाणे शास्त्रना वचनोए एकमां बेनी
सिद्धि अने असिद्धिए करीने विरोध नथी. पण श्री वृंदा-
वनमां ज्यारे श्रीकृष्ण अने राम पधारेछे त्यारे त्यां-
हांना व्रज गाइओ इत्यादिकने जोईने पोते आनं-
दने पामेछे. त्यांहां वादी शंका करे के आनंद ध-
र्मीरूप थईने धर्मरूप केम थायछे एम कहे त्यांहां
कहेछे जे जेम सैंधवनो कटको छे ते बाहेर अने मां-
ही एकरस छे तेम भगवान सर्वने जाणेछे. बाहेर
अने मांहे ज्ञानरूपछे अने ज्ञानना आधाररूप प-
ण छे तेमज आनंदरूपछे अने आनंदना आधार
रूप छे तेथी एनो कंई विरोध नथी. आ वात श्री
गुसाइजीए विद्वन्मंडन ग्रंथमां कहीछे. तेथी आंई

कंई विस्तार करता नथी. शंका करेछे के विवेक धै-
र्य राखीने भक्ति करे तो भगवान वश थाय त्यारे
दीनताथी आश्रय कर्याथी शुं एम कहे त्यांहां
भगवानने सर्व मनोरथ पूर्ण करनारा फल आ-
पनारा बधामां इच्छा करवा लायक अने काम-
रूप कहेतां आश्रयनी प्रार्थना करे छे.

॥ मूल श्लोक ॥

विवेक धैर्यभक्त्यादि रहितस्य विशे-
षतः ॥ पापासक्तस्य दीनस्य कृष्ण
एवगतिर्मम ॥ १ ॥

अर्थ–विवेक, धीरज अने भक्ति (आदि) विना-
नो अने पापमां आसक्त अने दीन एटले गरीब एवा-
ने मने कृष्णंज गति थाओ. आंई सुधी प्रभुना स्वरू-
पनो विचार करीने आश्रय कह्यो. हवे जीवना स्वरू-
पनो विचार करीने आश्रय कहे छे. जीव छे तेथी बी-
जुं कंई पण बनी शकतुं नथी. अने भगवान सर्व
प्रकार करी आपशे एवो विश्वास रहे नही अने
विवेक अने धीरज रहे नही तेथी साधन संपूर्ण

फल पेदा करी आपे एवुं बनी शके नही वळी पा-
पमां आसक्त छे एवाने तो कृष्णज गति छे तेथी
बीजो उपाय नहीं. अने वळी बीजा देवतांनी उ-
पासनामां फेरफार थायतो ते कोप पामे पण श्री
कृष्णतो परम कृपालु. जीवनुं बीजुं कांई साम
र्थ्य जोता नथी पण आप कृपा करीने फल आ-
पेछे. आंई 'मम' ए जे रूप छे ते अस्मत् शब्दनुं
रूप छे अस्मत् शब्द बोलनार वाचक छे तेथी श्री
आचार्यजीने आवां विशेषण घटतां नथी एम
जो कहे तो तेम नथी केम के आ बीजाना अधि-
कारे करीने बीजा सारु ए आज्ञा करीछे तेथी ए
विशेषण घटेछे जेम भगवाननुं वचन वेदमां छे
प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये भूयिष्ठां ते नमउक्तिं
विधेमः ॥ स्वस्तिमेस्तु वनस्पते इत्यादि वाक्यमां
यजमानना अधिकार प्रमाणे बोलवुं छे तेथी बधुं
निर्दोषपणाथी दोषवालुं नथी. वादी शंका करेछे
के बध्धा प्रकारे करीने निःसाधन छे ते शरण
आवे तोयपण तेने जोतुं होय ते केम थाय के-

मके ते तो कंई करतो नथी अने भगवाननी ग-
रज राखेछे जेवी जेवी सेवा करेछे तेवां तेवां फ-
ल थायं. वली भगवाननी सेवा करे अने बीजा
देवने भजे नही अने ते विघ्न करे त्यारे कल्या-
ण थवामां घणा विघ्न छे एवी आशंकामा मो-
क्षपणुं भगवानमां कंहेतां अने भगवाननी विनं-
ती करतां उपर लखेली शंकांनुं समाधान करेछे.

मूलश्लोक.

सर्व सामर्थ्यसहितः सर्वत्रैवाखि-
लार्थ कृत्॥ शरणस्थं समुद्धारं
कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्॥ १०॥ ॥

अर्थ - सर्व सामर्थ्य सहित छे अने सर्व ठेकाणे
संपूर्ण कार्यो भक्तोनां करेछे अने जे शरण जा-
य तेनो सारी रीते उद्धार तेमनाथी थाय छे ए-
वा श्रीकृष्ण जे छे तेमने हुं विनंती करूं छउं.
सामर्थ्ये करीने पण भक्तोनुं अनिष्ट निवारण
करेछे. गी. श्लो. यद्यद्विभूतिमत्सत्वं श्रीमदू-
र्जितमेवच्च॥ तत्तदेवावगच्छत्वं ममतेजोंऽ

शसंभवम् ॥ अर्थ-जे विभूतिवालो जीवहोय अथवा लक्ष्मीवालो होय अथवा बलवालो होय ते माहरा तेजना अंशथी पेदा थयेलोछे एम तूं जाण. श्लो. मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते ॥ अर्थ-महाराथी बध्धुं प्रवर्त्त थायछे. वळी अव्याहृतानि कृष्णस्य एवुं वचन छे तेथी हवे शंका करे छे जे सामर्थ्य होय तोय पण कोई वखत आश्रय कर्यो होय तेने फल न आपे अने मर्यादाथी ज फल आपे तो आश्रये करीने शुं वधारे थयुं एवी शंकामां कहेछे. बधी जगाए एटले बध्धा देशोमां एटले स्थानोमां अने चारे वर्णोमां अने चारे आश्रमोमां अने बध्धा प्रकारना कर्मोमां शरणागतनां संपूर्ण कार्योने करेछे. श्लोकः ॥ सकृदेव प्रपन्नोहं तवास्मि इति यो वदेत् ॥ अभयं सर्व भूतेभ्यो ददाम्ये तद् व्रतंमम ॥ अर्थ-हुं शरण आव्यो छउं अने तमारो छउं एमपण जे एकवार कहे ते कहेनारा सर्व प्राणीने हुं अभय आपुंछउं ए माहरुं व्रत छे. वळी बीजो श्लोक ॥ येदारागार पुत्राप्तान्प्राणान्वित्तः मिमंप

रं ।। हित्वामां शरणं याताःकथं तां स्त्यक्तुमुत्सृ
जे ।। अर्थ- दार जे स्त्री आगार ते घर पुत्र कुटुंब
प्राण आ लोक अने परलोकनो त्याग करीने
महारी शरण आव्याछे. तेनेहुं केम छोडी
शकुं. आंई त्याग ते समर्पण करीने रहेवुं,
तेनुं नाम त्याग छे कांके ए वात अंबरीषना
प्रसंग मांनी छे. अने ते वरवते अंबरीषे साक्षात्
त्याग नहोतो कर्यो पण बध्धुं भगवदर्पण क-
र्युं हतुं तेथी जो शरण आवे तो तेनी भग-
वान् रक्षा करेछे तेमां वळी रात दहाडो भजतो
होय तेनी रक्षा करे तेमां शुं? मर्यादाथी फल आ-
पे तोय पण जे बद्धाने छोडीने भगवाननेज जा-
णेछे त्यांहां मर्यादानी गरज रारवता नथी अने
जे शास्त्रमां कह्याछे. एम धर्म जाणीने भजतोहो
य तेनी मर्यादानी गरज रारवेछे ते उपर श्रीगी-
ताजीनो श्लोक ।। ये यथा मां प्रपद्यंते तां स्त-
थैव भजाम्यहं ।। अर्थ- जे जेम मने भजे
तेम तेने हुं भजुं छउं. तेथी आजो मर्यादा

विना भजे तो भगवान पण मर्यादाविना भजे ते
उपला वाक्यथी सिद्ध थाय छे. वळी श्रीमद्भागव-
तनो श्लोक दशमस्कंधे ॥ व्रजस्योवांह वैह-
र्ष भगवान् बालचेष्टितैः ॥ चिक्रीडे जन-
यन्मुदं मनोरथांतं श्रुतयो यथा ययुः ॥
अर्थ- व्रजने हर्ष पेदा करेछे अने आनंद पेदा क-
रतारमेछे अने श्रुंतियो तो जेमां मनोरथना अं-
तने पामीओ. वळी पंचम स्कंधमां. श्लो० मुकुं-
दो मुक्तिं ददाति ॥ अर्थ- मुकुंद भगवान् मु-
क्तिने आपेछे. श्लोक. द. स्कं. अ. ३ श्लोक ३३ त-
थानते माधव तावकाः क्वचिद् भ्रश्यंति मा-
र्गात्त्वयि बद्ध सौहृदाः ॥ त्वयाभिगुप्ता
विचरंति निर्भया विनायकानीकप मूर्ध
सुप्रभो ॥ अर्थ- हे माधव लक्ष्मीना पति आ-
पना जे जीवो छे ते मार्गथी भूला पडता नथी. के-
म के आपनामां स्नेह बांध्यो छे तेथी विनायक
जे गणपति तेना घणा सेनाधिपतिना माथाउपर प-
ग दईने फरेछे. वळी दशमस्कंधना त्रीजा अध्यायनो

श्लोक ॥ मर्त्यो मृत्युव्यालभीतः पलायन्
लोकान्सर्वान्निर्भयं नाध्यगच्छत् ॥ त्वत्पादाब्जं प्राप्य यदृच्छयाद्य स्वस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति ॥ अर्थ- जेनो मरणधर्मछे एवो जे मनुष्य ते मोतरूपीसाप थी बीहीने बध्धा लोकमां भागेछे देवछे तेने भजेछे ओषधी करेछे पण निर्भयताने पामतो नथी. तेथी फरतां फरतां तेने आपनुं चरण कमल मल्युं छे तेथी ते आंई तो सुई रह्योछे. अने भागतो नथी. तेनुं कारण ए जे आंईथी मोत भागी जायछे एम श्रीशुकदेवजीना वचन छे. ए विगेरे वचनोए करीने काळ अने यमादिक भगवदीय एटले जेणे बध्धुं भगवानने समर्पण कर्युं छे तेने बाधा करता नथी त्यारे बीजा विघ्न करनारा विनायक वगेरे शुं करे? तेथी पहेला कहेला दूषणो कंई नथी. केम के 'शरणस्थ[1] समुद्धारं' तेनो सारी रीते उद्धार करेछे अने एकवार जे शरण आवे तेनो जेम तेम उद्धार करेछे एवा जे श्रीकृ-

[1] जे शरणमां रह्योछे.

षण छे ते महारा आश्रय थाओ. एणे करीने ईश्वर छे ने बद्धाना मालक छे. तेना आगल दीन भाव थवो जोइए. दीनभावथी कर्युं होय ते ईश्वरनें संतुष्टकरवानुं कारण छे. अने दशवै पशोः प्राणाः आत्मैकादश ए श्रुति छे. तेथी प्राणनी पेठे आस्तोत्र सर्व सिद्धि करे छे. तेथी दश श्लोके करीने वर्णन कर्युं छे. अने अग्यारमो श्लोक आत्मारूपी छे एटले अक्षय फल बतावनार छे तेथी आ स्तोत्रनुं फल बतावेछे जे

॥ मूल श्लोक ॥

कृष्णाश्रयमिदं स्तोत्रं यः पठेत् कृष्णसन्निधौ
तस्याश्रयोभवेत्कृष्ण इतिश्री वल्लभोऽब्रवीत्

अर्थ- आकृष्णाश्रय स्तोत्र कृष्णनी सान्निध्यमां भणे तेने कृष्णनो आश्रय थाय. एम श्रीवल्लभ आज्ञा करे छे. कृष्ण छे तनो चारे तरफथी आश्रय थाय एटले सेवा थाय श्रीधातु सेवामां वरतेछे अथवा जेने श्री कृष्णनो आश्रय थाय अथवा जेणे करीने कृष्णाश्रय थाय एवुं आस्तोत्र छे एटले यथार्थ वर्णन करनार छे. तेथी आस्तोत्र कृष्णनी पासें अथवा कृष्णने मलवा सारु आस्तोत्र भणे तो कृष्णनो आश्रय थाय.

एवुं इदं एटले आ स्तोत्र छे तेथी आ स्तोत्र जेवो आश्रय करावेछे तेवो बीजुं कोई करावतुं नथी एम कह्यांथी बीजा स्तोत्रना पाठथी आ फल न थाय तेनुं कारण ए जे आ स्तोत्रथी जे अर्थनुं ज्ञान थायछे एवुं बीजा स्तोत्रथी नथी थातुं. शंका करेछे के आना पाठमां मेहनत थोडी छे तेमां एवडुं म्होटुं फल केम थाय. त्यांहां कहेछे जे श्रीवल्लभ कहेछे तेथी एम छे कांके श्रीमहाप्रभुजी छे ते भगवत्स्वरूपछे अने एमनुं कार्य उद्धार करवानुं छे वास्ते आ उद्धार सारु आपनुं करेलुं छे तेथी आमां अप्रमाणता नथी केमके उद्धार करवानुं आपनुं कार्य छे. भगवान छे ते सत्यवचन वाला छे ते पोतानुं वचन खोटुं पाडे नही. नारदजेवा महात्माए कहेलुं ते हुं तेमज करीश एम भगवाने कह्युंछे. शंकाकरेछे के सत्पुरुष उपर अनुग्रहवाला छे तेथी नलकुबर अने मणिग्रीवनो उद्धार कर्यो. त्यारे बद्धाना उद्धार सारु प्रकट्या एवा जे श्री महाप्रभुजी तेमना करयाथी अथवा तेमना

वचनथी भगवान शुं शुं नही करे? तेथी श्री आ-
चार्यजीनी कृपाथी बध्धुं थायछे. तेथी एमां सं-
देह नथी. आनंदे करीने अने भक्तीए करीने श्री
मत् प्रभु जे विठ्ठलनाथजी तेमना बे चरणने न-
मस्कार करीने अने जेनी कृष्णमांज प्रीति छे ते-
वा अमारा पिता एवा जे अमारा काका तेमने न-
मस्कार करीने कृष्णाश्रय जेनुं नाम एवुं जे आ
स्तोत्र तेनो श्री गोविंदरायजीना पुत्र श्री कल्याण-
रायजी जेमनुं नाम तेमणे प्रकाश कर्यो छे ते
सद्‌बुद्धिवाळाओने आनंदने पेदा करनारो थाओ.

श्रीव्रजरायजीकृत टीका चतुःश्लोकीनी.

॥ श्लोक ॥

श्रीमद्रासरसामृताब्धिविलसद्गोपी-
शपादांबुजद्वंद्वस्नेहविलासदानक-
रणे श्रीपारिजातोपमः॥स्फूर्जद्गो-
पकदंबिनी विलंसित प्रेमाख्यव-
र्त्माकरोद् भूयान्मे हृदिसंततंदुरि-
तहृच्छ्री विठ्ठलो वाल्लभिः॥१॥

अर्थ-सोभायुक्त रासना रसरूपी अमृतनो समुद्र तेमां शोभायमान एवा गोपीशना बे पादांबुज तेना विलासना दान करवामां पारिजातना जेवा छे अने शोभायमान गोपना समूहनी स्त्रीओ तेमां शोभायमान जे प्रेमनो मार्ग जेमणे प्रगट कर्यो छे अने पाप जेमणे दूर कर्यां छे एवा श्रीवल्लभना पुत्र ते म्हारा पापने दूर करनारा थाओ. भगवदीयोने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार पुरुषार्थ ते रूपी भगवानज छे. पोताना मार्गवर्तीओ उपर कृपाए करीने श्रीआचार्यचरण जे छे ते चार श्लोके करीने एज

चार पुरुषार्थ छे एम जणाववा सारु प्रकाश करे छे.

॥ मूलश्लोक ॥

सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः॥ स्वस्यायमेव धर्मो हि नान्यः क्वापि कदाचन॥ १॥

अर्थ-बधी वखते सर्व भावे करीने एटले सर्वात्मभावे करीने व्रजना अधिपति एटले व्रजनी अधिक रक्षा करनारा तेने भजवा पोतानो एज धर्म छे. कोई ठेकाणे कोई वखते पण बीजो नथी. ए वात युक्त छे. हवे जीवने सहज दासपणुं छे. अने दासनो धर्म छे के स्वामीनी सेवा करवी. 'हि' ए शब्दे करीने एज अर्थ घटे छे तेथीज अमारा प्रभुचरणोए एटले श्रीगुसांईजीए जीवनी उत्पत्तिथीज जीवोना पति श्रीगोकुलनाथ तेमना चरणकमलनुं दासपणुं एज पोतानो धर्म छे एवो निर्णय विद्वन्मंडन ग्रंथ मां कह्यो छे. सर्वदा पदे करीने कालादिकनो नियम नथी. सदा भजवा. धर्मशास्त्रादिकमां धर्म करवामां कालादिकनो नियम कह्यो छे एणे करीने धर्मनु फल ते पण

कालाधीनछे. तेथी एनो कोई वखत क्षय थायछे
अने आ फलनो क्षय थातो नथी तेथी सर्वदा कह्युं
वळी जो क्षणमात्र पण बीजो धर्म करे तो अनन्य-
पणुं भांगी जाय भगवानने जीवना पतीपणाथी
वर्णन करेला छे ते उपर पंचम स्कंधनो श्लोक ॥
सवैपतिःस्यादकुतोभयःस्वयं समंततः पातिभयातुरं जनं।। अर्थ-ते पति गणाय
जेने कियांथी भय न होय अनेच्चारे तरफथी भ-
यातुर जे जनछे तेनी रक्षा करे. पतिव्रतानुं क्षण
मात्र पण बीजी जगाए मन चाले तो एना पति-
व्रतापणानो भंग थाय तेथी एम पण जणाववा
सारु सर्वदा भजवा अने सर्व भावे करीने भग-
वानने जाणवा. पिता पुत्र पति वगेरे सर्व प्रका-
रे भगवानने जाणवा. ज्यांहां ज्यांहां जेवी ली-
ला होय त्याहां त्याहां तेवी भावना करवी. अ-
थवा सर्व भावे करीने एटले स्त्री भावे करीने
भजवा. सर्व पद स्त्रीमांज लागेछे. तेथी श्रीगो-
पीजनोए कह्युं छे. श्लो० **संत्यज्य सर्वविषयां**

स्तवपादमूलं प्राप्ता भजस्व दुरवग्रहमा त्यजास्मान्॥ अर्थ- सर्व विषयोने छोडीने तमारा चरणरूपी मूलने अमे पामीओ छइए. तेथी सर्व भाव ए स्त्रीभाव छे. भगवानमां एज भाव कामनो छे. वळी. सर्वे भावे करीने एटले श्री स्वामीनी आदिकनां कहेला शृंगार वगेरे चिन्हो सहित भगवान् भजवा योग्य छे. अथवा सर्व भावे करीने एटले प्रभु भावे करीने भजवा तेथी श्री गुसाईजीए आज्ञा करी के जो के भगवान स्त्रीना वेषवाला छे तो पण पुरुष जे एमने जोए छे तेमने एमना आगल उलटो स्त्रीभाव थई जाय छे. वळी श्रीमहाप्रभुजीए आज्ञा करी छे के एमनुं दर्शन कर्याथी स्त्रीभाव थई जाय छे. बध्धाने एज भावथी भजवुं योग्य छे ते उपर बृहद्वामनपुराणमां ब्रह्माजीए कह्युं छे. श्लोक॥ स्त्रियो वा पुरुषो वापि भर्तृभावेन केशवं॥ हृदि कृत्वा गतिं यांति श्रुतीनां नात्र संशयः॥ अर्थ- स्त्री होय अथवा पुरुष होय ते केशवने

पतिभावे करीने हृदयमां राखे तो जे गति श्रुतिरू
पाओने थई ते ए जीवने थाये एमां संदेह नथी
अथवां सर्व शब्दे करीने भगवामज कहेवाय छे. स-
र्वशब्दनी भगवानमांज शक्ति छे. तेथी तेमनीआ-
त्मरूपी स्वामीनीओ छे तेमने विषे भावे करीने ए-
टले दासीपणाए करीने प्रभुंआगळ तेमनी तेम-
नी केवरावेली मननी वात कहैवा रूपी सामग्री
संपादन करवी. एवो भावनो माहेलो अभिप्राय
छे. व्रजाधिप पदे करीने पूर्ण पुरुषोत्तमपणु ज-
णावे छे. जेम कृपाए करीने तेमने विषे एटले
व्रजवासीओने विषे पोतानापणुं प्रकट करीने
अने पोतानामां पण तेमना अधिपतिपणु प्रक-
ट करीने रमे छे तेमज सर्वात्मभावे करीने भजन क-
रे तो बधाएमा एमज करशे ए व्रजाधिपनामे
करीने प्रकाश करायछे. एमनामां पोताना अधि
पतिपणुं छे तेतो श्रीगोकुलना जनने रसदाननी
इच्छाथी दाबा श्रीहस्तेकरीने श्रीगोवर्धन पर्वत
धारण करवामां आनंद जेमने घणो थायछे ए-

वुंजेमनुं हृदय छे एवा श्रीगोकुलनाथेज कह्युंछे. मन्नाथं मत्परिग्रहं॥अर्थ-हुं जेनो नाथ छऊं अने हुंज जेनुं बध्धुं कुटुंबादिक छऊं अने शरीर विगेरे छऊं इत्यादि वाक्यो करीने पोताना स्वामीपणुं भगवाननुं मनमां लावीने भजवा, जीवने भगवानना अंश पणाए करीने एजं धर्मछे बीजो नथी तेउपर वाक्य. योयदंशः सतं भजेत्॥अर्थ-जेजेनो अंश होय ते तेने भजे. एने ज्यारे स्वधर्म कह्यो त्यारे बीजो धर्म करे तो बाधकपणुंछे तेथी देवकीना भाग्यना उदयाचल तेना भूषण तेमेणे श्री गीताजीमां कह्युं छे॥श्लोक॥ स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥अर्थ-स्वधर्मने विषे जे मरीजवुं ए कल्याणरूपछे. पर धर्म छे ते भयने पेदा करेछे. आने स्वधर्म कह्याथी बीजा ठेकाणे स्वधर्म नथी ए सिद्धज छे तोपण अन्य(एटले बीजो)नही एम कह्युं त्यांहां तेना तेना धर्मशास्त्रादिक बीजां ठेकाणा तेमां स्वधर्मपद कह्युंछे तेने सांभळीने पण चित्तमां

बीजी रीते न विचारवुं एटले तेने पोतानो धर्म नजा
णावो तेथी बहिर्मुख छे ते शरीरना धर्मने स्वधर्म
गणेछे पण भगवद् धर्मने स्वधर्म गणाता नथी ते
थी धर्मशास्त्र छे ते देहना धर्म सारुंज छे. तेथी
भगवद्धर्मनुं एमां निरूपण नथी तेथी युधिष्ठि
रे भीष्मपितामहने पुंछ्युं के बध्धां धर्मोमां पर-
मधर्म तमे केने मान्योछे त्यांरे भीष्म पिताम-
हे कह्युं के प्रभुना सहस्त्रनामनुं स्तोत्र अने भ-
क्तिए करीने भगवाननुं सेवन ते परमधर्मप-
णाथी कह्युंछे. शंका करेछे के देहवालाने ए कर
वाज जोइए तेने बध्धा प्रकारथी नाकां पाडो छो
तांहां कहेछे के खरीवात देहना संबंधपणाए करीने
करवा योग्यपणुं आवेछे. पणं जो बीजी सृष्टिनी
पेठे भक्तनो देह पंचमहाभूतनो होयतो. पण भक्त
ने तो भगवच्चरणारविंदनी रजमांथी देह संपादान
थयेलो छे. तेथी भजन एटले सेवा करवी एज धर्म
छे. बीजो नही तेथी सर्व निर्दोष छे तेथी एवीजरी-
ते श्रीवराहजीए वराहपुराणमां कह्युं छे. श्लोक

अन्यैवकाचित्सासृष्टिर्विधातुर्व्यतिरेकिणी॥ अर्थ-ए सृष्टिछे ते कोईक अनिर्वचनी अने विधातानी सृष्टिथी जुदी छे ते भगवाने पोतानी सेवा वास्ते उत्पन्न करीछे. तेथी सेवा करवी एज धर्मछे. देहना धर्ममां देशादिक साधनो कह्याछे ते धर्माभास छे धर्म नथी. केमके, ते पोते दुर्बल छे. बिजानी गरज पण एथीज छे तेथी आ धर्ममां एटले सेवाधर्ममां देशादिक साधन नथी तेथी कहेछे के कोई वखतमां अने कोई ठेकाणे बीजो धर्म नथी आ धर्मीनो मार्ग छे तेथी प्रबल छे. माटे क्यांए पण करवो. देशादिकनो नियम नथी. देशादिकनुं आधिदैविकपणुं भगवानज सिद्ध करेछे तेथी श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे॥ श्लोक॥ तीर्थीकुर्वंति तीर्थानि स्वांतःस्थेन गदाभृता॥ अर्थ-पोताना हृदयमां गदाना धारण करणारा भगवान् बिराजेछे तेथी तीर्थोने भगवद्भक्तो तीर्थरूप करेछे. आ धर्मीनो मार्गछे तेथी प्रबल छे माटे चाहे त्यांहां थाओ तोपण एनुं तिरोधान थतुनथी

एटले फलविनानो थतो नथी. धर्मीअने धर्मनुं एक
पणुं छे तेथी एने धर्म कह्यो छे तेथी कोई ठेकाणे
अने कोई वखते बीजो धर्म ए स्वधर्म नही ए एनो
अर्थ छे. भक्तोने धर्मरूपी पण भगवानज छे. भ-
क्तोने धर्मादिक एटले धर्म अर्थ काम मोक्षादिक-
मां मन जाय तो त्यांहांथी खेंचीने भगवानने धर्म
रूप जाणीने भगवानज भजवालायक छे. धर्मेक
रीने इष्टनी सिद्धिछे जेथी वेदमां तेमज प्रतिपादन
करायछे. धर्मेकरीने पापनी निवृत्ति छे. केम के
जे पोतानुं इष्ट छे तेनी प्राप्तिमां प्रतिबंधकपणा-
ये करीने पापज संभलायछे. त्यांहां अंग अने
विधि सहित करे तो पाप मटेछे. अने पाछो धर्म
कस्या करे. त्यारे फलनी प्राप्ति थाय. ए फलनी
प्राप्ति बहु दूर छे. केमके अंगसहित धर्म बनतो
नथी "अपि स्मर्यते" ए व्यास सूत्र छे तेथीअ-
ने श्लोक ॥ यस्य स्मृत्याच नामोक्त्या तपो
यज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतांयाति स-
द्यो वंदेतमच्युतम् ॥ अर्थ- जेनुं स्मरण कस्या

थी अने नाम कह्याथी तप, होम, यज्ञ अने क्रि-
यादिकमां न्यून होय ते संपूर्णपणाने पामेछे.
तांहांसुधी भगवानना स्मरणे करीनेज तांहां पू-
र्णपणुं थायछे नहीतो शास्त्रनी विधिछे तेथी
करवुं मात्रज छे. आ भक्तिमार्गीय धर्ममां वेदमा-
र्गीय विधिज नथी. तेथी भजन जे छे तेने भावा-
त्मकपणाये करीनें फलपणुं छे एनेज धर्मरूप-
पणुं कह्याथी भजनानंद जे छे ते अथवा तेथीज
फलनी प्राप्ति छे ए एनो भावछे. तेथी करीनेज
यदुकुलरूपी अमृत समुद्र तेना चंद्रमाए क-
ह्युं छे ॥ श्लोक ॥ **ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्त-
थैव भजाम्यहं ॥** अर्थ- जे जेम मने भजेछे ते-
ने तेमज हुं भजुं छऊं. अने विधिविनाना जे ध-
र्मादिक तेमने असाधकपणुं छे ते योगी याज्ञव-
ल्क्ये कह्युं छे. श्लोक ॥ **विधिहीनं भावदुष्टं कृ-
तमश्रद्धयाचयत् ॥ तद्धरंत्यसुरास्तस्यसु
मूढस्याकृतात्मनः ॥** अर्थ- विधिविनानुं अने
भावदुष्ट होय अने अश्रद्धाथी जे कर्युं होय ते अ

त्यंत मूढ अने एमां मन जेणे नथी रोक्युं एवा
कर्मना फलने अस्कर हरिजायछे. वळी भक्तोने
भगवानंज इष्टछे तेनी प्राप्ति बीजा धर्मोए करी-
ने नथी थाती त्यारे भगवत्सेवाविना भगवत्प्रा
प्तिनथी थाती. त्यारे भगवानना विप्रयोगनो ता
प थाय. त्यारे भगवांननी प्रांप्तीसारुपणभगवा
ननी सेवा करवी तेज धर्मरूपंछे. तेथी श्रीशु-
कदेवंजीना वाणीरूपी अमृतसमुद्र जे श्रीमद्
भागवत तेमां कह्युंछे. श्लोक॥ भक्त्या सं-
जातया भक्त्या बिभ्रत्युत्पुलकां तनुं॥
अर्थ- भक्तिए करीने पेदा थएली भक्ति एणेक
रीने शरीरमां रोमांच थई आवेछे॥ श्लो० भ-
क्त्या तुतोष भगवान् गंजयूथपाय॥ अ
र्थ- हाथीना यूथने पालन करनार जें गजेंद्र ते
ने भक्तिथी करीने भगवान् प्रसन्न थायछे.॥
श्लो०॥ प्रीयतेऽमलया भक्त्या हरिरन्या
द्विडंबनम्॥ अर्थ- निर्मल भक्तिथी भगवान्
प्रसन्न थायछे. बीजा तो बध्धा चाला छे.॥ श्लो०

भक्त्याहमेकया ग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सतां ॥ अर्थ-सत्पुरुषोने जे प्रिय अने सत्पुरुषोनोज आत्मा एवो जे हुं ते श्रद्धाथीज एक भक्ती तेथीज जणाऊं छउं. ॥ श्लोक ॥ प्रतिष्ठया सार्वभौमं सद्मना भुवनत्रयं ॥ पूजादिना ब्रह्मलोकं त्रिभिर्मत्साम्यतामियात् ॥ अर्थ-भगवाननी मूर्तिनी प्रतिष्ठा जो मंदिरमां करे तो पृथ्वीपति थाय अने मंदीर करावी आपे तो स्वर्ग मृत्यु अने पातालनो पति थाय. अने पूजादिक जो करे तो ब्रह्मलोकने पामे अने त्रणे करे तो भगवान् कहेछे के म्हारीबराबर एनु माहात्म्य थाय. एज रीते निष्कामपणाथी अने भक्तिपूर्वक जो करे तो मनेज पामे त्यांहांसुधी ए प्रसंगेकरीने ए रीते हजारो वचनोथी पण भक्ति विनानां बीजां साधनोथी भगवानने पमातुं नथी. एवो निश्चय थायछे. त्यांहांज स्वधर्मनुं निरूपण करता एवा जे भगवान् तेमणे श्रीमान् उद्धवजी प्रति कह्युंछे. सर्वेषां मदु-

पासनम् ॥ अर्थ- महारुं उपासन करवुं तेचा-
रे वर्णनो धर्मछे त्यांहांथी लइने ॥ **मां यः
स्वधर्मेण भजेन्नित्यमनन्यभाक्** ॥
अर्थ- ए रीते स्वधर्मे करीने अनन्यताथी
नित्य मने भजे त्यांहां सुधीना प्रसंगे करीने
अनन्यपणाथी जे भजन करवुं तेनेज स्वधर्म
पणुं छे तेथी धर्मनी इच्छाएं करीने भगवदी-
योनें बध्धा धर्मरूपी भगवानज भजवालाय-
क छे. तेनीज सेवा करवी ए एनुं तात्पर्य छे. वली
बीजा धर्मोने भगवाने जेवा जेवा अधिकारी
होय तेना तेना कह्या छे. अने पोताना भजनना
बधाए अधिकारी छे एम कह्युं छे तेथी बध्धा
पापने शुद्ध करे अने निर्मल वस्तु होय तेने अ-
धिकारपणु मानवुं जोइए. एवी वस्तु तो भग-
वद्भजनज छे तेथी धर्म एवुंजे पद छे ते भग-
वद् भजननुंज नाम छे. जेम तेजवाली जणश
अंधारामां पण देखाय अने अंधारामां देखाय
नही अने अजवाळामांज देखाय ते वगर तेजवा-

ळी जणास, पण तेजवाळी जणास बधी वरवत देखाय तेम आ सेवारूपी धर्म छे ते तेजवाळो छे, अने जेम गंगाजीमांथी आधिदैविक गंगाजी संताई गया होय तो ते शुद्ध नथी करतां तेम बीजा धर्ममां पण छे, अने अग्नि जेम फलाणाने बाळे अने फलाणाने न बाळे एम नथी तेम आ सेवारूपी धर्म छे ते बध्धाने शुद्ध करेछे. अने आ धर्मथी भगवान मळेछे. तेथी सेवामांज धर्मनो अभिनिवेष थायछे अने तेमां बध्धायनो अधिकार छे अने बीजा धर्मादिकमां जो धर्मादिकपणुं होय तो तेना गमता फलरूपी भगवत्प्राप्ति पण थाय अने बधायनो अधिकार पण होय. पण ते विना त्यांहां धर्म एवुं नाम छे ते गौण छे आ अर्थ घटेछे. सर्वना आत्मा जे भगवान् तेमनी सेवा एज आत्मानो धर्म छे. बीजा बध्धा देहना धर्मछे. ए एनुं तात्पर्य छे. अथवा ए अर्थ घटे छे जे बीजाना संबंध रहित एवा भगवानना भजननेज धर्मपणुंछे जेथी भगवाने पण क-

ह्युंछे. श्लोक ॥ भक्त्यात्वनन्ययाशक्यः ॥ अर्थ–अनन्य भक्तिए करीने हुंमलीशकुं छऊं श्लोक ॥ अनन्याश्चिंतयंतोमां ये जनाः पर्युपासते ॥ तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमंवहाम्यहम् ॥ अर्थ–जे अनन्य एटले भगवान विना जेने बीजुं इष्ट नथी ते चारे तरफथी महारुं चिंतवन करता करता महारा समीपमां महारो आश्रय करेछे एवा जेछे ते नित्य महारा सन्मुख पणाए करीने महारे विषे एकाग्र चित्तवाला छे तेमनो योग जे प्राप्ति अने क्षेम एटले होय तेनी रक्षा हुं चलावुं छउं. भक्तोने भगवाननुं भजनज स्वधर्म छे तेथी स्वधर्मपणाथी भगवानज सेवा करवा लायक छे पण बीजा धर्ममां मन कंई घालवुं नही. ए एनुं तात्पर्य छे एम भक्तने धर्मरूपी भगवानज छे एम कहीने भक्तने अर्थरूपी पण भगवानज छे एम आज्ञा करेछे.

मूलश्लोक

एवं सदास्म कर्तव्यं स्वयमेव करिष्यति ॥ प्रभुः सर्व समर्थो हि ततो निश्चिंततां व्रजेत् ॥२॥

अर्थ- एवी रीते सदा करवुं एटले प्रभु भक्त-
नो सारो अर्थ छे तेथी पोतेज बध्धुं करशे
माटे निश्चिंतपणाने पामवुं. सदा एम करवुं
जेम आगल कहेछे तेज आज्ञा करेछे. भक्त-
ना स्वामी अने पशुपुत्रादि अर्थरूप पण प्र
भुजछे तेथी पोतेज करशे ते कारणसारु नि-
श्चिंतपणाने पामवुं एमज करवुं. अर्थ छे ते
सर्वदा छानो राखवा जेवो होयछे अने ते बी-
जानी रक्षा पण करेछे त्यारे भक्तना सारा
अर्थरूपी प्रभुछे तेथी आपणे करवानी जे
रक्षा ते पोतेज करेछे एम सदा निश्चिंतप-
णाने पामवुं. जेम अर्थनी रक्षा सारु जीव
पोते यत्न करेछे केम के ते जड छे तेथी
आंई प्रभुनेज अर्थपणुं कह्युंछे. छानो जे

अंश छे अने रक्षा करवा लायक छे ते भाव-
रूपी जे अर्थ तेनी रक्षा अने ते छानो प्रभुज
करशे.पोतानेतो निश्चिंतज थवुं तेथी श्रीआचा-
र्यजीए नवरत्नमां कह्युं छे.' चिंता कापि नकार्या'
इत्यादि वाक्योए करीने एम अर्थने छानो रा-
ख्याथी निश्चिंतपणुं थायछे. तेम आंई अर्थ
रूपी जे भाव तेने बहिर्मुखादिक जे चोरो तेथी
भगवान पोतेज रक्षा करेछे. एमज छे. ए रीते
निश्चिंतपणाने पामवुं एम कह्युं. जेम अर्थ
छे तेने बध्धाथी बचावायछे. अने छानो रखा
यछे तेम आ भावने पण अति गोप्यपणुं छे
एम न कह्युं.पण निश्चित थवानुं कह्युं तेथी
गोप्य[1]पणुं जणाव्युं छे. अथवा प्रभु सर्वसमर्थ
छे तेथी करवानुं पोतेज करशे सदा एम जा-
णीने निश्चिंतपणाने पामवुं जेम अर्थेकरीने
ज बधी सामग्री वगेरे थायछे तेम आंई पण
प्रभु पोताने भोगववालायक देह अने तेनी
यौवनादिक सामग्री आदि प्रभुने उत्पन्न क-

१ एटले गोप्य जणाश छे तेने गोप्य कर्‍याविना निश्चिंतपणुं थतुंनथी.

री आपवानी जणाश छे तेथी पोतेज करशे जेथी सर्व नामे करीने भक्तोनो बध्धो अर्थ पोतेज छे तेथी सदा निश्चिंतज थवुं ए तात्पर्य छे तेथीज करीने रस समुद्रना सुधाकर जे चंद्रमा जे श्री गुसांईजी तेमणे रस सर्वस्वग्रंथ मां विनैव संमयक्रमं ए वचनादिके करीने निर्णय कर्योछे. एणे करीने अर्थना आधिदैविक रूप जे लक्ष्मी तेने पण दुःखथी पण मळे नही एवो जे रस ते अर्थे करीने तो न मले एवो होयज पण भगवान् तो पोतानाओमां ते पेदा करेछे तेथी भगवानज अमारा अर्थरूप छे एज बध्धुं करशे एमजाणीनेज पहेला कहेला सर्व भावे करीने सदा भजन करवुं तेथी प्रभु पण सर्वसमर्थ छे ते तेमज करशे ए एनुं तात्पर्य छे. शंका करेछे के भला एम करवुं. व्रजवर कुमारिका जे श्रीगोपीजनो तेमने योग्य छे. तेथी तेमने विषे घटेछे. तेविना बीजाने तो अयोग्यप-

णाथी केम एवो बोध करावेछे. तांहां कहेछे
जे खरी वात के एना योग्य जीव नथी पण
सर्वात्मभावे करीने भजन ए रीतनुं करे तो
भगवानना अनुग्रहे करीने एम थाय तेम
भगवान करे एवुं तात्पर्य छे तेथीज पुष्टिमा
र्गरूपी कमल तेनां सूर्यना जेवा जेमना च-
रण छे एवा श्रीआचार्यजीए भ्रमरगीतना
श्री सुबोधिनीजीमां निर्णय कर्यो छे के ते
दुःखथी पण नमले एवुं छे तोयपण तेनी
आशाए करीने भजनज करवुं एम कह्युं छे ते-
थी प्राप्ति जो नथाय तो आशाथी भजन क-
रवुं एम न केहेत. त्यारे श्रीगोपीजनना प्रेम-
ना कुमदना बंधु जे चंद्रमारूपी श्रीगुसांईजी
तेमणे श्रीविद्वन्मंडन तथा रससर्वस्वग्रंथोमां
लख्युं छे के सर्वात्मभावे करीने जो तेवुं भज-
न करेतो भगवान पण अंगीकार करेज. श्लोक
तस्मिन् घोषनितंबिनी त्वमचिरात्क-
र्ता प्रियः प्रायशः ॥ अर्थ- जेमां एवुं फल

आपवानी इच्छा भगवान अनुग्रहे करीने करे छे तेमां व्रजस्त्रीपणु भगवान् करी दे छे तेथी एमना अनुग्रहथी एम थायछे ए एनुं तात्पर्य छे. तेथीज करीने यदुकुलरूपी रत्नाकरना चंद्रमाए श्रीगीताजीमां कह्युंछे. श्लोक ॥ येयथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजाम्यहम् ॥ अर्थ- जे मने जेम भजे तेने हुं तेम भजुं छउं अथवा भगवानने करवानुं जे व्रजसुंदरीओनुं भजन ते आपणने दर्शन आपवा सारु भगवान करशे तेथी सदा निश्चिंतपणाने पामवुं ते प्रकारनी भगवाननी लीला तेना दर्शन सारु चिंता न करवी. प्रभु पोताना मनथी करशे ए एनुं तात्पर्य छे ए वात प्रसिद्ध छे जेथी प्रभुएज दुर्वासाप्रती एवी आज्ञा करी छे : श्लो० अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र इव द्विज ॥ अर्थ- हे द्विज हुं भक्तने पराधीन छउं. अस्वतंत्रनी पेठे तेथी भक्तना आधीनपणाए करीने भक्तना मनने गमतुं करवुं ते पोतानी मेळे

सिंद्ध छे निश्चय करीने एम छे ए अर्थ घटेछे जेथी करीने कह्युंछे. श्लोक ॥ संत्यज्य सर्वविषयांस्तव पादमूलं प्राप्ताः ॥ अर्थ- सर्व विषयने छोडीने तमारा चरण मूलने अमे पामीओ छइए ए श्लोक प्रमाणे जे भगवान सारु बध्धाने छोडे छे तेनो मनोरथ भगवान पूर्ण करेछे तेथीज भगवानेज कह्युं छे. श्लोकं ॥ ये त्यक्तलोकधर्माश्च मदर्थे तान् बिभर्म्यहम् ॥ अर्थ- महारा सारु जेमणे लोक अने धर्म छोड्यां छे तेनुं भरण पोषण हुं करूं छउं. एणे करीने भगवान भरण करेछे एम कह्याथी जेम भक्तने पोतानी लीलानुं दर्शन थाय तेमज करीने स्वरूपानंदात्मक पोतानी लीलामां पोताने विषेज भगवान स्थापन करेछे ए एनुं तात्पर्य छे. अर्थे करीनेज पोताने जे मनोरथ होय ते पुरो थायछे नही तो जलना तरंगनी पेठे उत्पन्न थयेला जे मनोरथ तेनी पूर्णता न थाय. तेम आंई प्रभुना

चरणनी सेवाए करीनेज भक्तना मनोरथनी पूर्त्ति सदा थायछे तेथी भक्तोने अर्थ रूपी भगवानज छे तेनींज सेवा करवी ए एनुं तात्पर्य छे जेम अर्थ विना लौकिक रमणादिक अने लौकिक भोग पण नथी सिद्ध थता. तेम आंई अर्थनुं आधिदैविक जे लक्ष्मी तेना प्रवेश विना भगवाननु रमण अने भोग नथी घटता ए वातनी जे संपत्ति ते पण पोतानी सेवाए करीने प्रसन्न थया एवा जे भगवान ते करशेज. ते श्रीमान् जे भगवान् तेना अनुग्रहे करीने तेनी प्राप्ति थाय तेथी रमण अने भोग बे घटेछे. भगवाननी आज्ञाए करीनेज भगवानज एक जेनुं शरण छे एवी लक्ष्मी तेनी प्राप्ति थाय छे तेथी भगवानज अर्थ रूप छे एज वात श्रीगोकुलनाथ जे भगवान तेमनी वाणीना अधिपती श्रीमान एवा अमारा प्राणेश्वर जे श्रीआचार्यजी तेमणे फल प्रकरणना श्री सुबोधि-

नीजीमां बधी जगाए भगवदआज्ञाए करीने आधिदैविक लक्ष्मीए प्रवेश कर्योछे एम कह्युं छे.' आ अर्थ बहुज छानो राखवालायक छे तेथी सर्व समर्थ ए पदे करीने परोक्षपणाथी गुप्तपणाये करीने श्रीमहाप्रभुजीए प्रकट कर्योछे. तेथी केटलुंक लखियेे. माटे एमना चरण कमलना मकरंदना पानथी जे माता थया छे तेमना हृदयमां प्रभुना मुखचंद्रना उदये करीने पोताना मनथी भावसमुद्रनी लहेरनो प्रकार थशे ए एनुं तात्पर्यछे एम भक्तना अर्थरूपी भगवाननुं वर्णन करीने भक्तना कामरूपी भगवाननुं वर्णन करेछे.

॥ मूल श्लोक. ॥

यदि श्रीगोकुलाधीशो धृतः सर्वात्मना हृदि॥ ततः किमपरं ब्रूहि लौकिकैर्वैदिकैरपि ॥ ३ ॥

अर्थ- जो गोकुलाधीशने सर्व प्रकारथी हृदयमां राख्या तेथी लौकिक अने वैदिकमां

शुं बीजुं बाकी छे ते तुं कहे. एम अंतःकरणं ने आज्ञा करेछे. श्री गोकुलाधीश जे छे ते सर्व प्रकारथी हृदयमां राख्या तो लौकिक सुखो- ए करीने अने वेदना फलोए करीने शुं बीजुं छे ते तुं कहे बीजुं कांई पण नथी ए एनो अ- र्थ छे. एम पोतानां मननेज साक्षी करीने कहे- छे. यदि एटले जो एपदे करीने कोईक जे परम भाग्यवालो होय अने जेणे पुण्य घणुं कर्युं होय तेने पण श्रीकुमारिकाना जेवो भा- व थायछे एणे करीने भावने दुर्लभपणुं ज- णावेछे. गोकुलाधीश एवा नामे करीने भग- वाननुं भक्ताधीनपणुं जणावेछे तेथी करी- नेज पोताना स्वामी जेमने भगवान छे एवा इंद्रादिकोए पण श्रीगोपीजनोना पतिपणा- ये करीने अभिषेक कर्यो. भगवानना मनना विचारना ज्ञाने करीने एज वात कही छे.

श्लोक॥ इति गोगोकुलपतिं गोविंदम- भिषिच्य सः॥ अर्थ- तेथीज गो ते गाई-

ओ अने गोकुलना पति जे गोविंद तेनोअ-
भिषेक इंद्रे करीने ए वचनमां गाईओ अने
गोकुळे कह्यार्थी गोपीओ अने गोपो अने गा
इओ पण कहेवाय छे ए एनुं तात्पर्य छे. तेणे
करीने तेमना बध्धाना भगवान पति छे एट-
ले अति रसिक छे अने गोपीओ आदि प्रेमर-
सने जाणनारा छे नही तो पूर्ण पुरुषोत्तम छे ते
केम गोपी (जे पशु तुल्य) होय तेनुं पोते अ
धिपति पणुं अंगीकार करे. केवल प्रेमथी-
ज अंगीकार कर्यो छे ते जो हृदयमां पुरुषो
त्तमना लायक भावे करीने धारण कर्यो
होय तो तेमज अंगीकार करे ए गोकुळा-
धीश नामे करीने जणावेछे. सर्वात्मना एट-
ले सर्व प्रकारथी अने सर्व भावे करीने एटले
काम भावे करीने आंई सर्वात्मना पद छे ते का
म भावनो अर्थ बतावेछे. जेम ब्रजना भाग्यरू
पी श्री गोपीजनोने सर्वात्म भावजेछे ते का-
म भाव रूपीज छे. तेथीज श्रीमद् भागवत

मां कह्युंछे. गोप्यः कामात् एटले गोपी
ओ कामे करीने पामीओ छे तेथी आ जे
श्री आचार्यजीनों प्रकट करेलो पुष्टिमार्ग ते
मां तेवा फलनीज प्राप्ति कहेवायछे एज भा-
वनो उपदेश कराय छे. कौंडन्यो गोपिकाःप्रो
क्ता गुरवः साधनं चतत् ए वचने करीने सं-
न्यास निर्णय ग्रंथमां स्वामिनीओज गुरु छे
एम श्रीआचार्यजीए आज्ञा करीछे: सर्वात्म
ना एटले कामभाव ए एनुं तात्पर्य छे.आ-
ने अत्यंत गोप्यपणुं छे तेथी स्पष्टपणाए न-
थीकह्युं एवा प्रकारथीजो पोते धारण
कर्या. पोते धारण कर्या एम कह्याथी
बलात्कारे करीने धारण कर्या ते उपर
श्री भागवतनुं वचन. श्लोक. मैवं विभो
र्हति भवान् गदितुं नृशंसं ॥ अर्थ - हे
समर्थ एवुं क्रूर वचन आप कहेवा लायक
नथी ए श्री भागवतना वचनना प्रकारे क
रीने बलात्कारे करीने धारण कर्या एए

नुं तात्पर्य छे. तो लौकिक एटले पति अने वैदिक एटले स्वर्गादिक अथवा पुत्रादिक एमणे करीने बीजुं शुं? कांई नही ए एनो अर्थ छे. तेथी करीने लौकिक अने वेदना बधा कर्मोनो त्याग करीने काम भावे करीने भजन ब्रजना नाथ तेमनां प्राणवल्लभ जे श्री गोपीजन तेमणेज कह्युं छे. श्लोक ॥ संत्यज्य सर्वविषयांस्तवपादमूलं प्राप्ताः ॥ अर्थः- बध्धा विषय छोडीने तमारा चरण मूलमां अमे आवीओ छईए ॥ श्लोक ॥ पतिसुतादिभिरार्तिदैः किं ॥ अर्थ- दुःखदेनारा जे पति सुतादिक तेमणे करीने शुं एम लौकिक वैदिक त्यांग करीने पछे भजन सारुं कह्युं. श्लोक ॥ तन्नोनिधेहि करपंकजमार्तबन्धो तप्तस्तनेषुच शिरस्सुच किंकरीणां ॥ अर्थ- तेथी करीने हे आर्तबंधु एटले दुःखियानासगा तापे करीने तप्या एवां जे स्तनो अने दासीओना मस्तको तेमना उपर आपना हस्तकमलने मुको.

इत्यादिके करीने कह्युंछे अने भगवाने पण
तेमज अंगीकार करेलोछे. तेथी ए जणायछे
के आ भाव छे ते प्रबल छे तेथी आथी बीजुं
कांईश्रेष्ठ नथी ए एनुं तात्पर्य छे. तु कंई जा-
णतोहो तो कहे. अथवा गोकुलना अधीश
ते पहेला कहेला काम भावे करीने बधी इंद्रि
योनो आधार जे मन तेमां राख्या तो लौ-
किक पतिए करीने शुं ?कईज नही आंई आ
तात्पर्य छे जो भगवान हृदयमां राख्या तो
बध्धी इंद्रियो भगवानमां तत्पर थायछे.त्या-
रेज जन्मनुं अने इंद्रियनुं सफलपणुं थाय
तेथी ब्रजना वरने वरवा लायक श्री गोपी-
जनोए कह्युं छे.॥ अक्षणवतां फलमिदं
न परं विदाम ॥ अर्थ- इंद्रियवालानुं फल
बीजुं अमे जाणतीओ नथी. एम आ श्लोकमां
कह्युंछे. वली श्री उद्धवजीए पण कह्युंछे. श्लो०
किंब्रह्मजन्मभिरनंतकथारसस्य ॥ अर्थ-
जेने अनंतनी कथानो रस होय तेने ब्राम्हण

ना जन्मोए करीने शुं ए रीते श्रीगोपीजननो भाव बताव्याथी बीजाना जन्मने निष्फलपणुं कह्युं छे. तेथी ए रीते जो प्रभुनुं धारण कर्युं तो लौकिक पतिथी शुं? कइंज नही एम एनुं तात्पर्य छे वेदमां कहेला जे लौकिक पति तेमणे करीने शुं? आंई एम छे जे वेदमां पतिभजने करीने मोक्ष थाय एम कह्युं छे तेंतो जेने देह अने इंद्रिय मलेलां छे तेवा जीवोने अयोग्य छे तेथीज श्रीआचार्यजीए आज्ञाकरीछे जे इंद्रियवालानुं तो पुरुषोत्तमनी प्राप्ति एज फल छे. बीजी रीते मोक्ष पण नथी जेम सदा अंधारामां रहेवुं ए कई आंखवालानुं फल नथी एम मोक्ष पण इंद्रियादिक सहित जे जीवो छे तेमनुं फल सर्वथा नथी तेथी पति वगेरेथी शुं ते तुं कहे कंईज नथी एम पूर्वपक्षी प्रती कहेछे. बीजुं पण एमने पति वगेरेथी कई छे ते तुं जाणतो होतो कहे. कंईज नथी शंका करेछे

भला भगवान न मलता होय ते वखतमां लौकिकमांज संबंध छे अने काम तो बलवान छे त्यारे कोई वखत एमने विषे मन चोंले त्यारे कर्युं ते पण न कर्युं थई जाय तेथी वेदानुसारे करीनेज करवुं बहु सारुं छे. एम कहे त्यांहां कहेछे के नही भगवानमां राखेलुं जे मन छे तेनी आसक्ति बीजे ठेकाणे घटती नथी. तेथी श्रीव्रजकुमारीना कामपूर्ण करनार जे कल्पवृक्ष जे श्रीनंदराजकुमार तेमणेज कह्युं छे.

श्लो०॥ **नमय्यावेशितधियां कामः कामाय कल्पते**॥ अर्थ महारे विषे जेमणे बुद्धिनो आवेश कर्यो छे तेमनो काम कई काम गणातो नथी अने सेकेलां अने उकेलेलांअन्न बीज वाववाना काममां आवता नथी. अथवा लौकिक जे जोवाना तथा सांभलवावगेरेना गुणो छे तेमणे करीने पण सर्व प्रकारे करीने काम भाव थाय तो पण व्रजनी जे पूर्वदिशा तेने शोभायमान

करनार जेमना मुरवचंद्रो छे एवा श्री गोपीजनो
ए कह्युं छे· श्लोक ॥ चूत प्रवालब र्हस्तबकोत्प
लाब्जे मालानु पृक्त परिधान विचित्र वेषो·अ-
र्थ आंबाना पल्लवना अने मोरनी चंद्रकाना
गुच्छा अने पोरणाना फूलनी माला ते सहित अ-
ने पीतांबर सहित छे विचित्र प्रकारनो वेष जे-
मनो· ए श्लोकमां कहेला गुणो सहित श्री गो-
कुलाधीशने त्द्दयमां राख्या· ते उपरांत बीजुं शुं?
कईज नही· ए एनुं तात्पर्य छे एम बधा प्रकारे
थी पण काम भावे करीने पभुनी जसेवा क-
रवी ए एनुं तात्पर्य छे एम काम भावनुं स्वरूप
कहीने मोक्षनुं स्वरूप कहे छे·

मूलश्लोक:

ततः सर्वात्मना शश्वद्गोकुलेश्वर पा-
दयोः ॥ स्मरणं भजनं चापि न त्या-
ज्यमिति मे मतिः ॥ ४ ॥

अर्थ– तेथी सर्व प्रकारथी गोकुलेश्वरना बे च-
रणोनुं स्मरण अने भजन ते छोडवुं नही ए·

वी म्हारी मति छे. वळी सर्वात्मभावे करीनें सदा गोकुळेश्वरना चरणोनुं स्मरण तेमज भजन पण न छोडवुं एवी म्हारी बुद्धि छे आनो अभिप्राय आ छे के कामभावे करीने भगवान्‌नो संबंध थया पछे ते संबंधना स्वभावे करीने बराबरी अने वगर सावधानपणाथी मानादिक थईने भगवाननो दोष जणाय तो सर्व प्रकारनो भाव जतो रहे तेथी सर्वात्म भावे करीने भजन करवुं ए एनुं तात्पर्य छे. सदा एम कह्युं तेथी एकक्षण मात्र पण ते विना आस्फुरावेष थाय. ए गोकुलेश्वर ए नामे करीने जणावाय छे. जेम गोकुलवासी ओनां सर्वात्म भावे करीने शरणागतीथी प्रसन्न थया अने चांतुर्य वगेरे विनानाओने विषे पण पोताना स्वामीपणानो अंगीकार कर्यो तेम तेने पण करशे एरीते ध्वनि निकळे छे.

चरण बे कह्या एणे करीने श्री स्वामिनीजीना चरण सहित पणुं जणावे छे. स्मरण एवुं पद कह्युं छे एणे करीने स्मरण छे ते चित्तनो-

धर्म छे तेथी भगवानना विप्रयोग समयमां स्म-
रण करवुं ए एनुं तात्पर्य छे. नही तो भगवा-
ननो विप्रयोग छे ते बहु तीखों छे तेथी जीवाय-
ज नहीं ए एनुं तात्पर्य छे. भजन जे सेवा ते
पण स्मरणनी रीतेज करवी ए एनुं तात्पर्य छे.
च एमा कह्यो छे तेणें करीनें भजनज करवुं ते चि-
त्त सहित करवुं ए एनुं तात्पर्य छे. अपि शब्दे क-
रीनें भगवान भजो अथवा मभजो तो पण पो-
ताने एटले जीवने तो भजवाज. तेथी श्री गोकु-
लाधीशना प्रीतिना मार्गरूपी कमलना सूर्य
जेवा जेमना चरणकमल छे एवा श्री गुसाईजी
ए कह्युं छे ॥ मारणे वरणे वापि दासीनां नाप्र-
भुर्गतिः ॥ अर्थ- मारे अथवा अंगीकार क-
रे पण दासीने प्रभुविना बीजी गति नथी.
आज अर्थ पोताने न छोडवो. एरीते पोतानो
त्याग न करवानुं कह्याथी अर्थ जणाव्यो ए
एनुं तात्पर्य छे. महारी मति ए रीते पोतानी
मति कह्याथी पोतानो अनुभव देखाड्यो

छे. भक्तिमार्गमां भक्तिज परम पुरुषार्थ छे. मोक्षथी अधिकपणुं तो भक्तिने सिद्धज छे. तेथी पुष्टिमार्गमां मोक्षपणुं तो भक्तिने सिद्धज छे. तेथी पुष्टिमार्गमां मोक्ष पणुं भजनने ज छे. तेथी भजनज वर्णन कर्युं छे. भक्तिने मोक्षथी अधिक पणुं छे ते तो श्रीभागवतमां घणी तरेहथी कह्युं छे. तेथी सारूप्य यहांथी आरंभ करीने विनामत् सेवन जना यहां सुधी अने स्वर्गापवर्ग नरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः ते पण अने वीक्ष्यालकान् यहांथी आरंभ करीने भवामदास्य त्यांहा सुधीना श्लोकोए करीने भजनज निरूपण कर्युं छे. तेथी भजन एटले सेवा तेंज मोक्षथी वधारे छे तेथी भगवाननी सेवा करवी ए एनुं तात्पर्य छे. मोक्षना निरूपणमां भजनने विषे आजीवने पोताने स्मरण अने भजननो त्याग न करवो एम कह्याथी पहेला कहेला धर्म अर्थ अने काम ते करवाथी भगवान पोताना वशमां थाय छे. एम

जणावाय छे. ए एनुं तात्पर्य छे. ए रीते मोक्ष-
नुं स्वरूप वर्णन कर्युं तेथी अने पोतानी मति
पणुं कह्याथी पोताना ओने तो एमज करवुं
जोइए ए एनुं तात्पर्य जणाव्युं ए रीते श्री गो-
कुलाधीश तेमनी वाणीना अधीशना मुखथी
निकळेलुं एवुं पोताना मार्गना धर्म अर्थ काम
अने मोक्ष तेमनुं अद्भुत स्वरूप एमना चर-
ण कमलनी कृपा ए करीने जेवी म्हारी बुद्धि
छे ते प्रमाणे मे टीका करी तेणे करीने श्री आ-
चार्यजी पोतानो जाणीने म्हारा उपर कृपाक
रो. जेमना चरणकमलना मरंदनी जे पंक्ति
तेनो भाव ते मुक्तिने तुच्छ करे छे तेना चरण-
कमलनी जे रेणुं ते मने प्रसन्न थाओ. श्री वि-
ठ्ठलना चरणकमलनी रेणुनी सारी रीते आ-
कांक्षा करनारो जे हुं तेणे पोताना श्री आ-
चार्यजीनी कहेलीजे चतुःश्लोकी तेनो म-
हारी बुद्धि प्रमाणे निर्णय कर्यो ए रीते श्री
मान एवी जे व्रजनी स्त्रियो तेना प्राणेश ते-

ना चरणकमलरूपी पुष्टिमार्गना चकोरना नेत्रने आनंद आपनारा एटले चंद्रमारूपी श्री वल्लभाचार्यजीए कहेली चतुःश्लोकी तेनी टीका भाव रस आपनारी श्री ब्रजरायजीनी करेली संपूर्ण थई.

दश लीलानो अर्थ.

१ सर्ग- एटले पंचमहाभूतनो अने तेनी तनमात्राओ अने इंद्रियो अने बुद्धि तेनुं जे जन्म तेनुं नाम सर्ग.

२ विसर्ग- एटले गुणनी विषमताथी ब्रह्मथी देह सहित जे जीवनी सृष्टि ते विसर्ग.

३ स्थान- एटले वैकुंठ भगवान् जे छे तेमना विजयरूपी जे सप्तद्वीपना राजाओनी मर्यादा बांधी ते स्थान.

४ पोषण- भगवाननो अनुग्रह जे छे तेनुं नाम पोषण अ०पुष्टि.

५ मन्वंतर- एटले सत्पुरुषोनो धर्म.

६ ऊति- एटले पहेला जन्मना कर्मनी जे वासना तेनुं नाम ऊति.

७ ईशानुकथा- ईश जे भगवान् तेमनी पछवाडे जे चालनारा तेमनी कथा.

८ निरोध- एटले पोतानी शक्तिनी साथे भगवाननुं क्रीडारूपी शयन ते निरोध.

९ मुक्ति- एटले बीजी रीतनुं रूप छोडीने पोताना रूपथी रहेवुं.

१० आश्रय- भगवानने विषे एक थईने रहेवुं.

कठण शब्दना अर्थ.

परिचय- एटले- व्यवहार.

स्त्रवेछे- निकळेछे.

असाधकपणुं- नही सिद्ध करनारपणुं.

हेतुनिष्ठ- हेतुथी कल्पना करनारो.

अव्रतयोगी- व्रत जे नही तेवा व्रतवालो.

शेष- बाकी.

विशेष्य- जेना गुण विशेषण बनावे ते.

अभिनिवेष- प्रवेश.

अन्वित- जोडायेलो.

गोप्यपणुं- छानापणुं.

आलिंगन- बाथ भीडवी.

शुद्धिपत्रम्.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध.
७	७	अहोरात्रेण	ह्यहोरात्रेण
८	४	यत्र कीर्त्तनेनैव	यत्र संकीर्त्तनेनैव
१५	१०	जलौकसा	जलौकसां
१६	१६	हे अजित ते त्रैलोक्यमां	हे अजित, त्रैलोक्यमां
२१	३	उद्धार करुं छऊं.	हुं उद्धार करुं छऊं.
२३	१	करिये नहीं	करिये के नहीं
२३	९	सारु	पुण्य
२६	१७	मिवापगाः	मिवापगा।
२८	३	स्नाननी	स्थाननी
३०	८	तेनो	तेनी
४६	११	भगवाननी	भगवाननो
४८	८	विरोव नथी	विरोध नथी
५२	१५	दद्याम्येतद्	ददाम्येतद्
५२	१४	तवास्मिइति	तवास्मीतिच
५२	१९	न्वित्तःमिमं	न्वित्तमिमं
५६	१४	तनो	तेनो
५९	५	स्यूर्जद्भो	स्फूर्जद्भो
६९	१६	रन्या	रन्य
८७	१६	कंईज	कईज